
मेघदूत
कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबाला

मेघदूत

कालिदास विरचित "मेघदूतम्" काव्यक
भावानुवाद

शब्द-शिल्पी :
कृष्ण कुमार कश्यप

चित्र-शिल्पी :
शशिबाला

भारती विकास मंच
बरहेता, लहेरियासराय, दरभंगा.

प्रकाशक : श्लोक प्रकाशन
गाँधीनगर, लक्ष्मीसागर (पो.)
दरभंगा - 846009

प्रकाशन वर्ष : दिसम्बर - 2008

ISBN - 978-81-907267-2-6

हस्तलिपि : कृ. कु. कश्यप.

शिल्प-सहयोगी : सुश्री ललिता,
बरहेता (दरभंगा) आ
सुजाता कर्ण,
जितवारपुर (मधुबनी)।

मूल्य : 250·00
(दू सै पचास रुपैया)

MEGHADŪTA (MAITHILI) by Krishna Kumar Kashyap & Shashibala

भूमिका

"कालिदास, सच-सच बतलाना!
वर्षा ऋतु की स्निग्ध भूमिका
प्रथम दिवस आषाढ़ मास का
देख गगन में श्याम घन घटा
विधुर यक्ष का मन जब उचटा
खड़े-खड़े तब हाथ जोड़कर
चित्रकूट के सुभग शिखर पर
उसे बेचारे ने भेजा था
जिनके ही द्वारा संदेशा
उन पुष्करावर्त्त मेघों का
साथी बनकर उड़नेवाले
कालिदास, सच-सच बतलाना!
परपीड़ा से पूर-पूर हो
थक-थक कर और चूर-चूर हो
अमल-धवल गिरि के शिखरों पर
प्रियवर, तुम कब तक सोए थे?
रोया यक्ष कि तुम रोए थे?
कालिदास, सच-सच बतलाना!"

बाबा नागार्जुनक एहि प्रश्नक उत्तर कालिदास की कहि क' देलथिन से त' हमरा पता नहि चलल, मुदा अपना मोन मे एकटा खोद-बेद जरूर उखड़ि गेल जेकर समाधानक ओरियाओन मे एतेक समय लागि गेल आ' तइयो बुझू जे बड़ी सिफबे करत, से भरोस नहि अछि।

ई प्रश्न मई, 2006 मे आओर फफनाइ भ' क' पसर' लागल जखन पैरिस विश्वविद्यालयक आमंत्रण पर हम आ शशिबाला ओत' गेल रही। पैरिस विश्वविद्यालयक विस्तृत परिसर मे सभ देशक अपन-अपन भवन छैक। 'मैशन डी इन्डे', भारत-भवनक देबाल पर शशिबाला भरिगर अरिपन लीख रहल छलीह आ हम ओकर व्याख्या क' रहल छलहुँ। दर्शक-श्रोता मे एकटा अमेरिकन विद्वान, डॉ. मार्क लिण्डले सेहो छलाह। ओ दू-तीन बेर एहि ठाँ आयल छथि आ हुनका गांधीवादक अलावे भारत-विद्याक प्रति गम्भीर रुचि छनि। जखन हम बता रहल छलियैक जे कार्त्तिक मासक पाबनि, "देवोत्थान एकादशी" दिन मिथिला मे एहि अरिपनक लिखिया सभ आँगन मे होइत अछि त'

अनायास लिण्डले हमरा पूछि देलनि, "अँय यौ, ओ एलइ घूरि क'.... यक्ष, कि नहि? ओकरो त' ओही दिन...." हम एहन प्रश्न सुनबाक उमेद नहि कैने रही, तें सोच' पड़ल। हमहूँ सामान्ये स्वर मे जबाब देलियनि, "ई बात त' हमरा पता लगब' पड़त जे यक्ष एखन कत' छथि। ओना, बाबा नागार्जुन कें त' कालिदास सँ बहुत गप-सप रहैत छनि, आ' ओ त' ऋषि-कवि छथि, यक्षहु कें देखनहि होयताह, मुदा आब त' ओहो भारत-भूमि पर रहइ नहि छथि; तखन...." लिण्डले बजला, "बड़ बेस.... बतायब हमरो, मैथिली मे।"

हम मार्के लिण्डलेक गप्पक निहितार्थ बुझलहुँ, आ एक तरहें सकारियो लेलियनि मुदा ई एकटा असाध्य काज छल हमरा लेल। हमरा कविता लिखबाक कोनो तेहन योग्यता नञि अछि। ओना बाप-पित्ती खूब कविता कैलनि। हम निरसल लोकक अनेरुआ शिक्षक छी, काजक थाक मे बात जैंता गेलइ। बात फेर तखने जगलै, जखन एहि वर्ष हमरा दुनू गोटे कें इटली देशक, सिएना विश्वविद्यालयक आमंत्रण भेटल। पन्द्रह सितम्बर हमर जन्म-दिन अछि। ई हमर साठिम छल, आ ओही राति हमरा दुनू गोटे कें, २ बजे राति मे, दिल्ली सँ मॉस्को के लेल उड़बाक छल, मॉस्को मे किछु घंटाक ब्रेक आ ओत' सँ रोम। सोचलहुँ, यैह असली मौका अछि। भ' सकैत अछि, मुक्ताकाश मे विचरैत वैह मेघ कतहु भेट जाय, मुदा ओकरा चिन्हबइ कोना? शशिबाला बजलीह, "तेकर चिन्ता नहि करू, हम चीन्हि जैबइ"; "बताउ ने हमरो, कोना चिन्हबइ? एहि ठाम त' अगबे मेघ सँ भरल छै सम्पूर्ण आकाश।"

जहाज हनुमानजीक परर मे टङायल शून्य सँ सघन मे आ फेर कोनो मनोलोक मे सोंइ-सोंइ करैत अपने मने चुभुकि रहल छल। देखलियनि, आचार आ अनुभव सँ नमिआयल हुनकर सुविस्तृत आँखि एक बेर चमकल, ठोरक दुनू कोन निमिष भरिक लेल अँकुरायल आ सहज भ' गेल। ओ बजलीह, "एतेक बरखे अहाँ सँ सीख रहलियइ अै, से कहिया काज औतइ! ओहुना, स्त्रीक आँखि, विजय प्रकाश जी कहलखिन जे बिलाइक आँखि सन होइ अै.... ओ आँखि मे लोकक फोटो खीच रखइ अै, अपन अनन्त मेमोरी मे.... ओ मेघ घुघुनसुहाँ छल.... बेचारा यक्ष कतेक काल धरि बजैत-बजैत असोथकित भ' गेल हैत, लेकिन एकरा मुँह स' एक टा बकार

तक नञि निकललै.... एहन लोक घौना खसौने, झुकड़ि क' चलइ अै.... ने केकरो स' बेसी हेम-छेम आ ने केकरो स' अरारि; अपन काज स' मतलब रखइ अै.... एहन लोक केकरहु नञि, आ सबहक.... निरपेक्ष; चिन्हबइ, कियै ने...." ..बाजिते-बाजिते ओ निना गेलीह। पाँच घंटाक उड़ानक बाद जखन मॉस्को मे उतरलहुँ त' ओतुका ठंढी कालिदासक हिम-शिखर मोन पाड़ि देलक। किछु घंटाक बैसारी मे, मॉस्को-एअर-पोर्टक लाउन्ज मे, नीक जेकाँ 'मेघदूत'क पैनी छना गेल।

एहि यात्रा मे हमरा सभ कें इटलीक चारि शहर — सिएना, नेपुल्स, जेनोवा आ रोम मे मिथिला-अरिपनक लिखिया-प्रदर्शन, कार्यशाला आ अरिपनक तात्विक-तान्त्रिक विषय पर व्याख्यान करबाक छल। जत'-जत' ई कार्यक्रम भेल, शशिबालाक निपुण हाथक द्रुतालेखन लोक कें मन्त्रमुग्ध करैत रहल। सभ ठाम पिठार, अरिपन, पुरैनि, कोबर, ककबा.... अनघोल छल। हम मिथिला-सेवा बुझि पिछला दस वर्ष सँ यूरोपियन समुदाय मे मिथिला-कलाक पढ़ौनी करइ छी मुदा एहि बेरुका उपलब्धि बेसी घनगर छल, सभ तरि मिथिलामय। सभ शहर मे, नमरि-पछुड़ि क', केओ ठेहुनिआ देने, केओ फर्श पर ओंघरायल, गोर-भुर्रीक इटैलियन सुन्दरी सभ शशिबालाक निर्देशन मे अरिपन करैत हमरा तेहने लगलीह जेहन कालिदास अलकाक सुन्दरि सभ कें स्वर्ण-बालु मे मोती नुकबैत आ तकैत देखलनि — "अन्वेष्टव्यैः कनक-सिकतामुष्टि निक्षेपगूढ़ैः, संक्रीड़न्ते मणिभिरमरप्रार्थिता यत्र कन्याः"। उज्जर पिठारक मोती कतेको सुन्दरिक मनक मइल कें धोखारि क' अमल बना रहल छल।

जेनोवा मे यूरोपक बेस प्रसिद्ध प्राच्यविद्या-संस्थान अछि - सन्त्रो लीगूरे स्टूडी ओरिएन्टाले - चेल्सो। एकर अध्यक्षा, इमैनुएला हमर अन्तरंग सखी छथि। प्रकृति जहिना हुनका अपरम्पार विद्या देलथिन तहिना अतिमानुषी सौन्दर्य, कालिदासक 'प्रथम नारि, यक्षिणी' सँ कनिञे कम। इमैनुएलाक पुस्तकालय आ अभिलेखागार बहुत समृद्ध छनि। एहि ठाम 'मेघदूत'क पद-संख्या आ अनुवादक स्वरूप पर निश्चय कैलहुँ। "मेघदूतम"क पद-संख्या पर आ' 'पूर्वमेघ' 'उत्तर-मेघ' सर्ग-विभाजन विषय पर विद्वन्मण्डली मे अनेकता अछि। बहुत पहिलुक टीका सभ मे एहन कोनो विभाग नञि

अछि आ पद-संख्या सर-दर चलैत अछि। साहित्य अकादमीक *The Megha-Duta of Kalidasa, Sushil Kumar De, 1957* मे पद-संख्या 1 सँ 111 धरि लगातार राखल गेल अछि, जखन कि अन्य स्रोत सभ मे 121, 118, 125 आ 116 देखाओल गेल अछि। अपन एहि 'मेघदूत' मे 121 पद अंकित कैल अछि आ' पदक क्रम-संख्या सर-दर चलैत अछि — १ सँ १२१ धरि।

विश्वक अनेक भाखा मे 'मेघदूतम्' क अनुवाद भेल अछि। सभ सक्षम कवि एहि साहित्य-पद्मक पराग सँ अपन भाखा कें ओड़ार' चाहैत छथि। यद्यपि कि हमहूँ किछु ताही भावें, योग्यताक अभाव रहितहुँ, अपन मैथिलीक महाबखारी मे दू मुट्ठी योगदान करबाक प्रयास कैल अछि, मुदा जड़िक बातें किछु आओर सेहो अछि। कालिदासक एहि महान रचनाक पहिल आस्वादन हम सैंतिस-अड़तीस वर्ष पूर्व, प्राय: बीस-बाइसक उमेर मे कैने छलहुँ। वयस् गुणे, तखनुक विचार किछु बेसी रोमनित्रा रहल होयत, मने-मन कोनो काल्पनिक यक्ष-यक्षिणि कें टेब क' एहि काव्य-दर्पण मे निघारलहुँ कि नहि, से मोन नहि अछि मुदा कालिदास प्रकृतिक जाहि शाश्वत सौन्दर्यक पृष्ठभूमि मे अत्युच्च मानवीकरणक सूक्ष्म भावबोधक सृष्टि करैत छथि, तेकरा चिन्हबाक सामर्थ्य तखन हमरा नहि छल। तखन, कथानक सँ सम्बंधित एकटा ऐतिहासिक मामला मन कें ताहि कालें खूब हुरकुच्चैनि देने छल से नीक जेकाँ मोन अछि, जेकर धमक सँ एखनहुँ हमर मस्तिष्क मुक्त नहि भेल।

'मेघदूतम्' क पहिल पद मे महाकवि लिखैत छथि जे "…. जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु ….." (सीताक स्नान स' पवित्र भेल रामगिरिक आश्रम मे); आगाँ पद-संख्या १२ मे "आपृच्छस्व प्रियसखममुं तुङ्गमालिङ्ग्य शैलं, वन्द्यै: पुंसां रघुपतिपदैरङ्कितं मेखलासु.." (रामगिरिक उत्तुंग शैल ई, धारण कैने रामचरण-छवि..") अथवा पद-संख्या १०६ मे "इत्याख्याते पवनतनयं मैथिलीवोन्मुखी सा…." (पवनतनय लङ्का मे जा कें मैथिलि-सेवा कैलनि….) उपस्थापित करैछ जे राम-जानकी यक्ष सँ पूर्वहि रामगिरि (चित्रकूट) मे छलाह। वृद्धपरम्परानुसारें, इतिहास विपरीत अछि। सीताराम वनबासक क्रम मे चित्रकूट मे निवास कैलनि, वने मे सीताजीक हरण भेल, राम-रावण-युद्ध भेल, रावण मारल गेल आ विभीषणक नेतृत्व मे, लङ्का मे, राम-राज्यक स्थापना भेल। विभीषणक राज्य-काल मे यक्षक

रामगिरि पर निर्वासन दण्ड-भोगक लेल जैबाक प्रश्ने नहिं उठैत अछि, कारण जे कोनो शासक अनका राज्य-सीमा मे अपन अपराधी वा कैदी के दण्ड भोगबा ले' कोना पठा सकैत अछि? प्राचीन कथा-प्रसङ्गें, रावण अपन बेमातर भाइ कुबेर कें लङ्काक राजगद्दी स' धकिया क' भगा देलक, पुष्पक विमान छीनि लेलक आ निरंकुश-अनाचारी शासक के रूप मे खूब कुख्यात भेल। कहल जाइछ जे मध्य प्रदेश आ सम्पूर्ण तमिल क्षेत्र लंकाक अधीन छल। रामायण-कथा मे पंचवटी क गवर्नर सूर्पनखाक नककट्टीक कथा जगजाहिर अछि। तैं, शापित यक्ष रावणक शासन-काल सँ पूर्वहि चित्रकूट स्थित रामगिरिक निर्जन स्थल पर बास कैलक, आ बहुत संभव अछि जे बाद मे रामक बास भेलाक कारणे ओकर नामाकरण 'रामगिरि' भेल हो।

प्रथम विश्वकवि वाल्मीकि "रामायण" मे मैथिली आ लक्ष्मणक संग श्रीराम द्वारा चित्रकूट बासक विस्तृत वर्णन कैलनि अछि। वनबासक पथ पर चलैत सभ क्यो प्रयाग मे भरद्वाज ऋषिक दर्शन कैलनि आ ओही आश्रम मे राति बितौलनि। श्रीराम भरद्वाज सँ निवेदन कैलथिन —

"पित्रा नियुक्ता भगवन प्रवेक्ष्यामस्तपोवनम् ।
धर्ममेवाचरिष्यामस्तत्र मूलफलाशनाः ।।"

(अयोध्या-काण्ड/सर्ग ५४/१६)

रामकहलथिन, हमरा पिताक आदेशें कठिन वन्य जीवन बितैबाक अछि आ तपसी धर्म निबाहक अछि। एहि उद्देशें कोनो उपयुक्त स्थान बताउ। ऋषि सस्नेह कहलथिन —

"अवकाशो विविक्तोऽयं महानद्यो: समागमे ।
पुण्यश्च रमणीयश्च वसत्विह भवान सुखम ।।"

(ओतहि/२२)

भरद्वाज कहलथिन, दू टा महान नदीक संगम पर पसरल ई मुक्त भूमि मात्र एकान्ते नहि बरु पवित्र आ मनभावन अछि। अहाँ आराम स' एत' रहु। मुदा रामक कहब रहनि जे —

"आगमिष्यति वैदेहीं मां चापि प्रेक्षको जन: ।
अनेनकारणेनाहमिह वासं न रोचये ।।"

(ओतहि/२५)

अहाँक एहि प्रसिद्ध आश्रम मे वैदेही के, आ' हमरो, देखै के लेल नगरक लोक बारम्बार आबाजाही करत। राजभवन सँ सेहो लोक औताह। तैं एत' ठहरब उचित नहि। कोनो अन्य उपयुक्त स्थान बताओल जाय।

ऋषि बजलाह —

"दशक्रोस इतस्तात गिरिर्यस्मिन् निवत्स्यसि ।
महर्षिसेवितः पुण्यः पर्वतः शुभदर्शनः ।।"
(ओतहि/२८)

एहि ठाम स' साठि मील दूर एकटा पहाड़ अछि जाहि पर अहाँ निवास क' सकैत छी। ओत' महान ऋषि लोकनि रहइ छथि। ओहि ठाम कारी प्रजातिक बानर, जेकर नाङरि बहुत नम्बा होइ अै, भारी हड़बिरों मचौने रहइ अै। चित्र कूट नामक एहि पहाड़ पर जत'- तत' बानर- भालू डेरा खसौने रहैत अछि आ' जेकर सुषमा गन्धमादन पर्वतक समान अछि। .... किन्नर आ नाग जातिक लोक हड़सट्ठे जाइत-अबैत रहइ अै। (आगाँ) ।

उपर्युक्त उद्धरण सँ प्रमाणित ई होइछ जे रामगिरि पर यक्षक उपस्थिति सीता-राम-लक्ष्मण सँ पूर्वहि भेल छल। कालिदासक यक्ष कें कहियो कोनो किन्नर वा नाग सँ भेंट नहि भेलइ कोनो ऋषि-मुनिक दर्शन नञि भेलइ। ताहि काल धरि ओ स्थान जन-शून्य छल। भ' सकैछ जे यक्षक प्रस्थान कैलाक बाद ओत' किन्नर वा अन्य जातिक लोक सभक आवाजाही प्रारम्भ भेल हो। साँच की अछि से महाकवि ए जानथि मुदा नागार्जुनक प्रश्न सँ महाकविक सभटा खिस्सा देखार भ' जाइत अछि।

"मेघदूतम्'क कथानकक आधार, ओकर स्रोत आ' स्वयं महाकविक जीवनीक सम्बंध मे कोनो प्रामाणिक सूत्रक अनुपलब्धता अछि, तें जतेक विद्वान, ततेक मत। काव्यक श्रीगणेश करैत यद्यपि कि महाकवि कथानकक प्रविष्टि बहुत सामान्य ढंग सँ करबैत छथि, कवित्वक ई गुण चरित्र कें आसानी स' मोन मे बइसा लैत अछि। कथा अछि जे शिवक धाम कैलास पर्वतक ढलान पर स्थित अलकाक राजा कुबेरक एकटा उच्च अधिकारी, कोनो यक्ष, अपन प्रियतमाक संग रंग-रभस मे लागल रहि गेल आ' यक्षपति कुबेरक काज हरजा भ' गेलनि, जाहि बातें कुबेर कुपित भ' क' ओहि यक्षकें एक वर्ष धरि अपन प्रिया सँ दूर रहबाक दण्ड देलनि आ अलका सँ निर्वासित कै वर्ष भरिक लेल (चित्रकूट स्थित) रामगिरि पर्वत पर पठा देलनि। आठ मास धरि निर्जन गिरि आश्रम मे रहैत यक्ष विरह-दशा सँ विगलित भ' गेल छल जखन अषाढ़क प्रथम दिवस पर मेघक दर्शन कैलक। जेना जगज्जननी सीताक

वियोग मे श्रीराम मति-विचलित भ' क' गाछ-विरिछ आदि सँ हुनक पुछारि करैत छलाह, तहिना यक्ष अपन यक्षिणिक चरम विरह मे उचित- अनुचित माध्यमक विवेक सँ ऊपर उठि गेल आ 'मेघ' कें अपन समदिया बनबाक आग्रह करैत ओकरा अपन सोखर सुनौलक।

पाठकक जिज्ञासा एतबा सँ शान्त नहि होइछ। लोक किछु आओर बूझ' चाहैत छथि; कोन एहन बात छल, की ओकर अपराध छल जे ओकरा एकान्त बासक दण्ड भेटल? एहि सम्बंध मे कैक तरहक खिस्सा सुनल जाइत अछि। कालिदास अपन कथानक आ चरित्र अपना देशक संस्कृति मे स' बिछइ छथि, तेकरा विलक्षण रूपें रोलइ-छोलइ छथि आ तखन विश्वक लेल अद्वितीय कीर्ति गढ़इ छथि। महोपाध्याय मल्लिनाथ एहि कथानकक स्रोत ब्रह्मवैवर्तपुराण मे मानैत छथि।

'ब्रह्मवैवर्तपुराण' मे 'योगिनी' नामक आषाढ़-कृष्ण एकादशीक महात्म्य बतबैत एकटा कथाक उल्लेख अछि जे श्रीकृष्ण युधिष्ठिर कें बतौलनि। कथा अछि जे अलकाक अधिपति यक्षराज कुबेर शिवक परम भक्त छलाह आ प्रतिदिन सविधि हुनकर पूजन करैत छलाह। पूजाक हेतु फूल तोड़ि क' लैबाक जिम्मा 'हेममाली' नामक एकटा सेवक कें देल गेल छल। हेममालीक पत्नी 'विशालाक्षी' महासुन्दरि छलीह। एक दिन हेममाली अपन पत्नीक संग विलास-मग्न रहि गेल आ कुबेरक ओतय नियत समय पर फूल नहि पहुँचा सकल। कुबेर अपन नियमानुसार केनहुना पूजा त' सम्पन्न क' लेलनि, मुदा एहि अपराध कें शिवक तिरस्कार मानि ओहि अनुचर कें कुष्ठ-रोग सँ ग्रसित होयब आ साल भरिक लेल अपन प्रिया सँ विलग भै मर्त्यलोक मे रहबाक शाप द' देलथिन। श्रीकृष्ण युधिष्ठिर कें बतौलथिन जे आषाढ़-कृष्ण पक्षक 'योगिनी' नामक एकादशी-व्रत कैला स' ओ यक्ष शाप-मुक्त भेल आ पुनः अपन प्रियतमाक सहवास पाओल।

'हमरा गामक 'भाइ', श्रीकमल नारायण दास विज्ञ साहित्य-रसिक छथि। भाइ कने भिन्न कथा बतौलनि। अलकाधीश कुबेर अपन एकटा विशेष पदाधिकारी, कोनो यक्ष कें, मानस-सरोवर सँ स्वर्ण-कमल लैबाक आदेश देलनि। ओ यक्ष एगो यक्षिणी सँ प्रेम करइ छल। यात्रा स पूर्व यक्ष अपन प्रेयसी लग गेल आ पुछलकइ जे परदेस स' की सनेस लाबी। बड़ जिद कैला पर यक्षिणी बजलइ, जाउ ने, जे रामाक लेल लेबनि, से एकटा हमरो लेल ल' लेब। ओ स्वर्ण-कमल वर्ष मे एकहि

टा फुलाइ छै,आ' एकहि राति फुलाइ छै, सेहो कार्त्तिक पूर्णिमाक राति मे। ओना, सगरो सरोवर अगबे स्वर्ण-कमल देखाइत छल मुदा ओतेक मे असली मात्र एकहि टा। यक्ष ई बात बुझइ छल। ओ असली स्वर्ण-कमलक संग एक टा नकलीयो कमल ल' आयल। गाम आयल त' पहिने ओकरा लग गेल, यक्षिणी लग, आ असली स्वर्ण-कमल ओकर खोपा मे सजा देलक; धनाध्यक्ष कुबेर कें भेटलनि नकली कमल।

यक्षिणी दिव्य स्वर्ण-कमल खोपा मे लगौने छमकि क' बाहर गेली, लोक देखलक, सेनापति के कहलक, सेनापति राजा लग चुगलिआ देलक। यक्ष बजाओल गेल दरबार मे, राजा पुछलनि, यक्ष सकारि लेलक। प्रेमिकाक लेल राजद्रोह। जो, वर्ष भरिक वियुक्ति भोग! ....खिस्सा एना बढ़इ छइ!

अपना ओहि ठाम कहबी छइ, बहुरिया के जे छनि से खोंइछे मे। हमरो ततबे बूझल जाय। हम कतेको समय स' कालिदास के बूझ' चाहइ छी; जतबे बुझाइ छै, ततबे अधखरू लगइ छै। आ' तें लिखबाक साहस नञि क' पबइ छलहुँ, बात एकदम जकड़िया गेल छलैअ। हमर परम मित्र दिनेश कुमार मिश्र भू-पटल वैज्ञानिक आ लेखक छथि। मेघे जकाँ नदीक किछेरे-किछेरे बड़ घूमल छथि। बात शेरो-शायरीक हो तइयो, आ' उहकन के हो तइयो — हिनकर जोड़ा भेटब कठिन अछि। बतौलियनि, 'मेघदूत' लीखब; तपाक द' फोन पर सुनौलनि, "तस्याः किंचित्करधृतमिव प्राप्तवानीरशाखं, हृत्वा नीलं सलिलवसनं मुक्तरोधोनितम्बम्।" दुनू दिस स' उमरल ठहाका हमरा लेल उर्जाक काज कैलक।

कालिदास एकहि छन्द, मन्दाक्रान्ता मे सम्पूर्ण काव्य रचलनि अछि, हमरा मे ओ सामर्थ्य नञि अछि। ई प्रयास हम कैल अछि जे प्रवाह बनल रहै। वर्तनी मे बहुत दोष होयत; हम जेना बजइ छी, तेना लिखबाक प्रयास कैल अछि। ....जे.पी. आन्दोलनक जमाना मे दुष्यन्तक गजल हम सभ खूब गाबी —'ओ मुतमयिन हैं कि पत्थर पिघल नहीं सकता, मैं बेकरार हूँ आवाज मे असर के लिए।' हमरा बुते निरक्षरता त' दूर कैल नहि भेल समाज सँ, मुदा अपने अपन दूत बनि क' आखरक सनेस त' बिलहि सकैत छी! तें आखरक हमर समाद, मैथिलीक पद-पंकज पर! जेना गोस्वामीजी कहइ छथिन —

"जनकसुता जग जननि जानकी। अतिसय प्रिय करुना निधान की॥
ताके जुग पद कमल मनावउँ। जासु कृपा निरमल मति पावउँ॥

विनीत —
कृष्ण कुमार कश्यप
२२ दिसम्बर, २००८.

दुटप्पी

संस्कृत-साहित्यक मनीषी कालिदासक कृति विश्व साहित्य मे अनुपम अछि; ताहू मे 'मेघदूतम्' खण्ड-काव्य अपन शब्द-वैशिष्ट्य आ चित्रात्मकताक लेल अद्वितीय मानल जाइछ। "कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः" सन उक्ति सँ महिमामण्डित महाकविक कालजयी कृति 'मेघदूतम्'क मैथिली मे भावानुवाद कै कश्यप जी मैथिली-भाषी साहित्य-रसिक लोकनि कें वस्तुतः एकटा अनुपम उपहार प्रदान कैलनि अछि। जाहि गूढ़ रस-ग्रंथि कें कालिदास संकेत मे जनैबा लेल विश्रुत छथि, तेकरा कश्यप जी प्राञ्जल लोकभाषा मे व्याख्यात्मक रूप देलनि अछि। विश्वक प्रथम महाकाव्य 'रामायण'क रचना वाल्मीकि संस्कृत मे कैलनि। ओही महाकाव्यक आधार पर गोस्वामी तुलसीदास जी 'रामचरित मानस'क रचना लोकभाषा मे कैलनि आ कोटि-कोटि लोकक हृदय पर अपन आधिपत्य स्थापित क लेलनि। हमरा बुझने, 'मेघदूतम्'क मैथिली मे भावानुवाद कै कश्यप जी तेहने महान कार्य कैलनि अछि।

कालिदास यद्यपि कि 'मेघदूतम्'क प्रथमहि पद मे 'जनकतनया' मैथिलीक अभिवादन कैलनि अछि मुदा काव्यक अन्तरंग भाग मे कतहु मिथिलाक चर्चा नहि कैलनि अछि। कश्यपजी एहि बड़का अभावक पूर्ति करैत कतेको ठाम मिथिला कला आ संस्कृतिक तेहन छटा 'मेघदूत' मे रखलनि अछि जे सर्वथा एकटा नवीन कृति उपलब्ध होइत अछि। मिथिलाक ग्राम्य-खेल 'चनमा' कें अलकाक सुन्दरि सभ सँ जोड़ि क' कश्यप जी जेना रखैत छथि से मूल काव्य सँ कनेको बेछप नहि होइत अछि —

मिथिला मे गामक बच्चा सभ
धूरि मे चनमा खेलय
चुटकी मे झुटकी-काठी लै
होसिआरी सौं नुकबय।

"अलका मे सुन्दरि सभ खेलय
बाकुट मे मणि लै-लै,

स्वर्ण - बालु मन्दारक छाया
सुरगण देखय मगन भै।"

(पद सं. ६३)

आजीवन मिथिला - कला आ संस्कृतिक लेल संघर्ष - रत कश्यप जी अपनाहि रचना मे 'शिल्प - कला'क चर्च कोना छोड़ितेथि, सुयोग पाबितहि 'कशीदा' आ 'चित्रकला'क आभा सँ अलकापुरीक भवन - अटारी झमकारि देलनि—

"अलका मे सभ भवन अटारी
दुरखा धुरखुर पाया,
सँभतरि लिखिया भीत - भीत पर
रंगक पसरल माया।"

"ठाम - ठीम पर कोबर - कक्बा
बर्रे - बाँस - कमलदह,
नयना - योगिनि घोघे तर मे
रचबथि रास अतत्तह।"

(पद सं. ७५)

आगाँ, यक्षक शयनकक्ष मे पलंगक सजाओट मे मिथिलाक कशीदा - कला खूब जमइ अछि—

"सुजनी टीपक बनल किनारी
सिंधी आओर कसूती,
डेढ़िया टीपक पत्ता - पुत्ती
जंजीरा मे मोती।"

"गुलुआ टीपक बनल कमलदह
अद्भुत रंग जमइ अै,
ठाँओ देल पर चकमक अरिपन
आँगन मध्य लगइ अै।"

(पद सं. ६४.)

कालिदासक वैशिष्ट्यक कतेको कारण अछि जाहि मे भावक चित्रात्मकता प्रमुख अछि। ओना साहित्य आ कला दुनू एकहि फूलक सुगंधि आ पराग अछि, मुदा बहुत कम साहित्यकार अपन कृति मे दुनूक नीक संयोजन क' पबैत

छथि। आचार्य भवभूति कलाक सदृश्य साहित्य वा वाणी कें सेहो आत्माक कला कहलनि अछि। प्रसिद्ध विद्वान हॉरेस आ जोन्स 'साहित्य आ कला' पर बहुत काज कैलनि अछि। हुनका मोताबिक, 'कविता मुखर चित्र आ चित्र मौन कविता' अछि। प्रस्तुत पुस्तक, 'मेघदूत'क चित्रात्मक भावना कें शशिबाला खूब नीक जेकाँ जीवन्त कैलनि अछि। हमरा बुझने, शशिबालाक चित्र, एहि प्रकारक छवि-छटा सँ सम्पन्न दुर्लभ मिथिला- कृति अछि। एहि ठाम शशिबालाक चित्र कालिदासक बोली बजैत अछि, मिथिलाक रंग मे। प्रसंगाधारित चित्रक बोधगम्यता कविताक ईषत् प्राञ्जलता आओर सुरुचिपूर्ण बना देलक अछि। शशिबालाके ई निपुणता हुनकर कठिन साधनाक उपज अछि।

शुभाकांक्षी

डॉ. उमेश कुमार 'उत्पल'
व्याख्याता, हिंदी - विभाग
बि.म.आ. महाविद्यालय,
बहेड़ी (दरभंगा)

२५.१२.२००८



मेघदूत

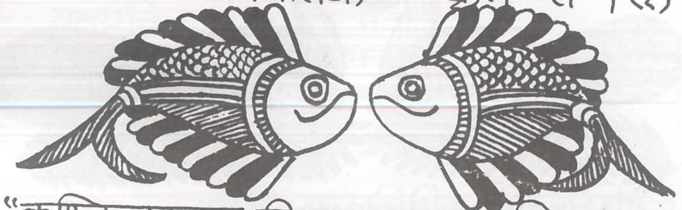


कोनो एक टा यक्ष
प्रिया-रस-रंगक मातल,
कैल काज मे चूक
नृपक सेवा बरदायल ।

कुपित भेला धनदेव
यक्षपति एहि घटना सँ,
दण्ड देल, 'एकान्त,
वर्ष भरि दूर प्रिया सँ ।

मन मसोसि तन कान्तिहीन
दुस्सह दुःख भारी,
चलल यक्ष वनबास
त्यागि यक्षिणि सुकुमारी ।

बसय रामगिरि पर्णकुटी मे
आकुल मन सँ,
जतय मैथिली बास कैल
वनबासक क्रम सँ ।(१)



"कश्चित्कान्ता विरहगुरुणा स्वाधिकारप्रमत्तः
शापेनस्तंगमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः ।
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु ॥"

जँ-जँ बीतल मास
प्रिया सँ दूर विरह मे,
तिल-तिल लागल गलै
विकल मन फिरय विजन मे ।

बीतल भीषण जेठ
प्रचण्ड निदाघक पहरा,
अति भल भेल विराम
शमन भेल तापक घधरा ।
आयल प्रथम अषाढ़
पसरि घन कारी-कारी,
नभ पर तनल ओहार
विरह मन बुझि हितकारी ।

"ई के बढ़िते आबि रहल
पर्वत-फुनगी दिशि,
आ' कि कोनो गजराज
ढाहि मारय क्रीड़ा-वश" ? (२)



तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी
नीत्वा मासान्कनकवलयभ्रंशरिक्त प्रकोष्ठः।
आषाढ़स्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुं
वप्रक्रीड़ापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श ॥"

विपदा जखन प्रगाढ़
तखन क्यो कानि लैत अछि,
आँखिक पथ सँ नोर
झहरि दुःख बाँटि लैत अछि ।

जखन अहर्निशि कष्ट
तखन क्यो कानत कतबा ?
अपनहुँ दैव बिसारि
नित्य-रोगी केर सेवा ।

छारि आँखि केर कोर
नोर छल जमल कोंढ़ मे,
उठल कतहु हुमकार
लहरि प्राणक झोंकरि मे ।

सिहकल स्निग्ध बसात
हुलासक ऊष्मा पसरल,
उठल रोम मे कम्प
कम्प सँ काया सिहरल ।
यक्षपतिक अवनत सेवक
घुमि घाड़ उठौलक,
उठल, ठाढ़ भै बढ़ल
मेघ दिशि डेग बढ़ौलक ।

चलि नहि सकल क्षीण तन दुर्बल
तलमलाय पुनि भासल,
भावावेगें बढ़ल प्राणबल
हर्षित मनहि विचारल । (३)

"अहा ! पहिल दिन अपन जानि
क्यो एत' एला अछि,
निश्चय स्वजन सुजान
जे दुःख मे ठाढ़ भेला अछि"।

"स्वागत अछि हे जलद
सजल, हे तुहिन-तरल,
हे भावरूप, हे वाष्परूप
कोमल-निर्मल, अति मृदुल सरल ।(४)

"अयलहुँ एहि ठाँ से भाग्य हमर
कनिञे विलमू जलपान करू,
सज्जन जन सँ संयोग कठिन
एतबाक हमर अभिधान करू ।"(५)

"तस्य स्थित्वा कथमपि पुरः केतकाधानहेतो-
रन्तर्बाष्पश्चिरमनुचरो राजराजस्य दध्यौ ।
मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथावृत्ति चेतः
कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे ॥"३॥
"प्रत्यासन्ने नभसि दयिताजीवितालम्बनार्थी
जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन्प्रवृत्तिम ।
स प्रत्यग्रैः कुटजकुसुमैः कल्पितार्घायतस्मै
प्रीतः प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार ॥४॥
"धूम ज्योतिः सलिलमरुतां संनिपातः क्व मेघः
संदेशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।
इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन्गुह्यकस्तं ययाचे
कामार्त्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु ॥५॥

"पुष्कर-आवर्त्तक ख्यात कुलक
हे अंबुद, अहाँ सुनायक छी,
के नहि जानय ई सत्य वचन?
सभ जीवादिक प्रतिपालक छी ।"

"बड़-बड़ गुण सँ संयुक्त अहाँ
इच्छानुरूप छविधारी छी,
खन श्यामल तन अति भीमकाय
खन श्वेत-पीत लघु-कायिक छी।"

"हे पराक्रमी, हे पुण्यवान
जें स्वर्गपतिक प्रिय सेवक छी,
वर्षा-खेती विप्लव-कारक
तें देवराज केर वाहन छी ।"

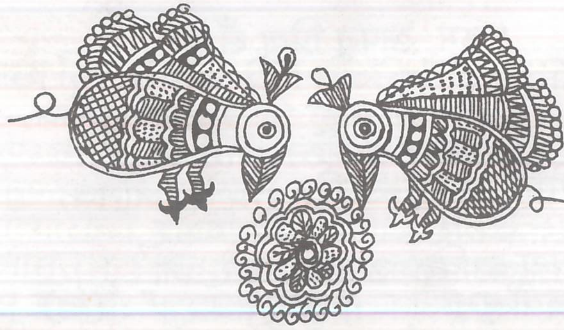
"हम अपनू प्रिया सँ दूर
एत' निर्जन गिरि-वन मे,
केकरा कहू समाद
विकट ई प्रश्न मोन मे ।"
"नीति-वचन अछि, भद्र-कुलीनक
अस्वीकार श्रेयष्कर,
नीच व्यक्ति उपकार करै जौं
तइयो बुझू अहितकर ।" (६)

"जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां
जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः ।
तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशाद्दूरबन्धुर्गतोऽहं
याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा ॥"

"हे जलदं, अहाँ वृष्टिक दाता
सन्तप्त जनक दुःखहर्त्ता छी,
धनदेव कुबेरक सेवक हम
हुनकहि क्रोधें निर्वासित छी।"

"अलका नगरी अति सुखद पुरी
कत प्रवल यक्ष केर हर्म्य जतय,
उद्यान मध्य प्रासाद विमल
उद्भासित चन्द्रालोक ततय।"

"कथि हमर प्रिया यक्षिणि ओहि ठाँ
हुनके कहबनि सम्वाद हमर,
'हम छी नीके, चिन्ता ने करु
प्रारब्धक ऊपर जोर केकर ?" (७)



"संतप्तानां त्वमसि शरणं तत्पयोद प्रियाया:
संदेशं मे हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य।
गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणां
बाह्योद्यानस्थितहरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या"॥



"बैसि समीरक अङ्क जखन
निश्शंक मने ऊपर जायब,
परदेशी - वनिताक हृदय मे
निश्चित आस जगायब।"

"हुलसि-पुलकि काढ़ल चोटी
खन बाम-दहिन झटकारत,
"आओत घर घुरि कन्त
हृदय - तन - कोखि जुड़ायत।"

"पराधीन चाकर हमरा सन
के अछि आन अभागल,
प्रेमातुर एकान्त प्रिया सँ
जे मुँह मोड़ि पड़ायल ?" (८)



"त्वामारूढं पवनपदवीमुद्गृहीतालकान्ताः
प्रेक्षिष्यन्ते पथिकवनिताः प्रत्ययादाश्वसन्त्यः।
कः संनद्धे विरहविधुरां त्वय्युपेक्षेत जायां
न स्यादन्योऽप्यहमिव जनो यः पराधीनवृत्तिः॥"

"जखने जायब कनिसे आगाँ
नीक सगुन पायब मन-भावन,
पवन होयत अनुकूल सहायक
बाम भाग चातक शुभ गायन।"

"जौं आरो किछु आगाँ जायब
नभ मे दृश्य मनोहर पायब,
हेंजक हेंज बगुलनी सभ कें
गर्भ समय बुझि किलकैत पायब।" (९)

"बन्धु ! तोहर भौजी सतबरती
दिन गनि-गनि दुःख काटैत होयती,
जँ बिनु बाधा चलिते जयब'
देखिह' केहन विकल ओ होयती।"

"नारिक प्रेम घटै नहि ता' धरि
जा धरि बाँचल आसक चिनगी,
मिलन-पियूषक पान उमेदें
पथ हेरय जा' बाँचल जिनगी।" (१०)

"मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वां
वामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगन्धः।
गर्भाधानक्षणपरिचयान्नूनमाबद्धमालाः
सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्त बलाकाः"॥९॥
"तां चावश्यं दिवसगणनातत्परामेक पत्नी-
मव्यापन्नामविहतगतिर्द्रक्ष्यसि भातृजायाम्।
आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां
सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि"॥१०॥

"ठनका तोहर सोहनगर लागत
धरती कण-कण जागत,
सुगबुगायत उर्वर माटिकतन
कदलिक कोखि जुड़ायत।"

"ठनका स्वर सुनि हंसहु जागत
मानस-सर जैबा' ले,
धरत पाछु कैलासपुरी धरि
मलकोका पाथेय तोरा ले'।" (११)

"रामगिरिक उतुंग शैल ई
धारण कैने राम-चरण-छवि,
छूटल-बिसरल तोहरे मीता
बउक भेल टक तकय दिवा-निशि"।

"पाबि तोहर प्रेमक सम्भाषण
समय-समय पर गाढ़ालिंगन,
पुनि विछोह केर दावानल सौं
दग्ध जेकर अछि आहत तन-मन"।

"छोड़य उष्ण उसाँस कुहेसक
जेना गीत गाबय कवि प्रेमक,
अंगमालिका मीतक लै शुभ
बिदा होअ' अगिला उद्येशक।" (१२)

"कर्त्तुं यच्च प्रभवति महीमुच्छिलिन्ध्रामवन्ध्यां
तच्छ्रुत्वा ते श्रवणसुभगं गर्जितं मानसोत्काः।
आ कैलासाद्बिसकिसलयच्छेदपाथेयवन्तः
संपत्स्यन्ते नभसि भवतो राजहंसाः सहायाः॥" (११)

"हे चंचल घन ! मन थीर कर'
अगुताबः जुनि, मति धीर धड़',
प्रस्थान सँ पहिनहि बाट-घाट
पुनि कथन-समादक ध्यान कर' "।

"अलका नगरी अछि दूर बहुत
कत वन-पर्वत, जनपद-मरुथल,
सरिता-उपवन, गोचर-चाँचर
दुर्गम घाटी , निर्झर अविरल"।

"चलिते-चलिते जँ थाकि जाइ
पर्वत पर उतरी सम्हरि-सम्हरि,
लागय पिआस त' नदी बीच
पिबिह' जल शीतल सुड़ुकि-सुड़ुकि।" (१३)



"आपृच्छस्व प्रियसखममुं तुङ्गमालिङ्गय शैलं
वन्द्यैः पुंसां रघुपतिपदैरङ्कितं मेखलासु।
काले-काले भवति भवता यस्य संयोगमेत्य
स्नेहव्यक्तिश्चिरविरहजं मुञ्चतोबाष्पमुष्णम्"॥१२॥

"मार्गं ताबच्छृणु कथयतस्त्वत्प्रयाणानुरूपं
संदेशं मे तदनु जलद श्रोष्यसि श्रोत्रपेयम।
खिन्नः खिन्नः शिखरिषु पदं न्यस्य गन्तासि यत्र
क्षीणः क्षीणः परिलघु पयः स्रोतसां चापयुज्य"॥१३॥

"एहि ठाँ सँ आगाँ जयब' त'
तपसी-सिद्धक बस्ती भेटत',
ललना सभहक फदका सुनि क'
हँसिओ लगत', साहस बढ़त'।"

"दौड़-दौड़, देखू नभ मे
पर्वत चोटी अछि भासि रहल,
अथवा बसात नग-सुन्दरि कें
बल सौं उढ़ारि क' भागि रहल।"

"ओहि ठाँ लगले बेंतक वन मे
दिग्गज सँ होसिआरे रहिह',
सूँढ़क झपटा सँ बचि-बचि क'
उत्तर दिशा मे उड़ि जइह'।" (१४)

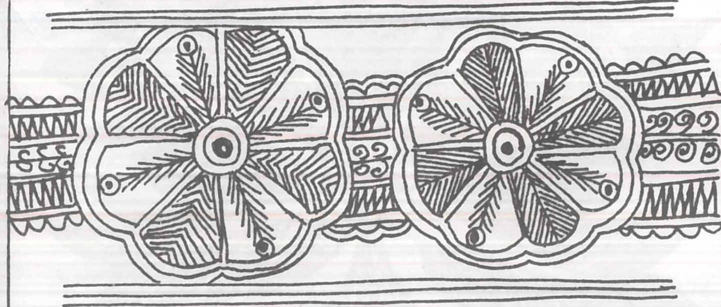


"अद्रेः शृङ्गं हरति पवनः किंस्विदित्युन्मुखीभि-
र्दृष्टोत्साहश्चकितचकितं मुग्धसिद्धांगनाभिः।
स्थानादस्मात्सरसनिचुलादुत्पतोदङ्मुखः खं
दिङ्नागानां पथि परिहरन्स्थूलहस्तावलेपान्"॥

"दिबड़ा भीड़क अगनित छिद्रें
निकलि रश्मि झिलमिल किरणावलि,
रत्नजटित इन्द्रक धनु भू पर
जेना शची हो आनि समारलि।"

"अथवा झिझिया नाच रचाओल
प्रकृति नटी बुझि टोना-टापर,
डाइन-योगिनिक दीठि ने लागय
घन-सुकुमार श्याम-सुन्दर पर।"

"रत्नछाँहि सतरंगी द्युति सँ
रञ्जित तोहर श्याम कलेवर,
मोरपाँखि - मणिमाल पहिरने
जेना घुमय नभ-वन मुरलीधर।" (१५)

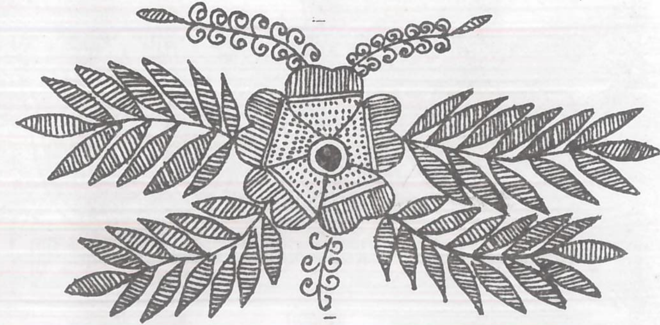


"रत्नच्छायाव्यतिकर इव प्रेक्ष्यमेतत्पुरस्ता-
द्वल्मीकाग्रात्प्रभवति धनुःखण्डमाखण्डलस्य।
येन श्यामं वपुरतितरां कान्तिमापत्स्यते ते
बर्हेणेव स्फुरितरुचिना गोपवेषस्य विष्णोः"॥

"तोरे पर खेती अवलम्बित
तोरे सँ सभहक मुँह पान,
तोरहि पर सभ पाबनि-पूजा
गिरहथ-बोनिहारक कल्याण।"

"ग्रामवधू सभ तोरा स्नेह सौं
मुँह उघारि कैं तकथुन,
ओ नहि जानथि कनखी-मटकी
नयन-समागम करथुन।"

"जोतल खेतक सिँउथि सुवासल
निहुरि चूमि तेकरो परतारिह',
जेना छिनार चकभौरी दइ अँछि
पच्छिम सँ उत्तर चलि जइह'।" (१६)

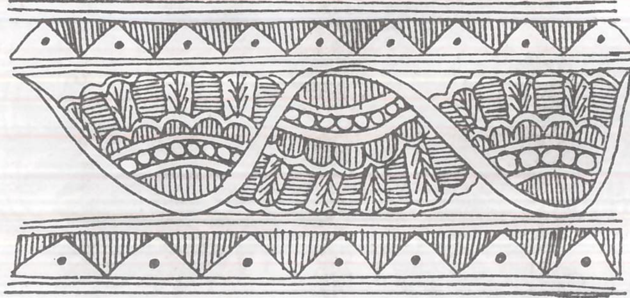


"त्वय्यायत्तं कृषिफलमिति भ्रूविकारानभिज्ञैः
प्रीतिस्निग्धैर्जनपदवधूलोचनैः पीयमानः।
सद्यः सीरोत्कषणसुरभिक्षेत्रमारुह्य मालं
किञ्चित्पश्चाद्व्रज लघुगतिर्भूय एवोत्तरेण"॥

"काजक पाछाँ अपसेआँत भै
एक्कहि गति नहि चलिह',
देखि सुठाम विलमि जइह'
पुनि नव ऊर्जा लै बढ़िह' ।"

"आम्रकूट पर्वत पर सदिखन
दावानल पजरैत रहइ अछि,
जमि क' बरसि मिझबिह' तेकरा
साधु जनक दुःख साधु बुझइ अछि।"

"दुःख सँ त्राण पाबि भल पर्वत
तोरा कृतज्ञ मानि बइसौतह,
कृपनहुँ नहि उपकार बिसारय
उच्च लिलार कोना अनठौतः ?" (१७)



"त्वामासार प्रशमितवनोपप्लवं साधु मूर्ध्ना
वक्ष्यत्यध्वश्रमपरिगतं सानुमानाम्रकूटः ।
न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः।"

"गिरि आम्रकूट केर एक भाग
घेरने अछि विस्तृत आमकवन,
पाकल-पाकल सभ भाँतिक फल
लुबधल-सोहरल मोहय सुधि-मन ।"

"घुमहा सन पर्वत पीत शीर्ष
तइ पर चिक्कन मेघक मढ़नी,
तों सटल-सुतल लगब' जहिना
भूमा देवीक उरोजक ढुढ़नी ।"

"देखथुन सुर दम्पति हिलसि-हिलसि
अद्भुत दुइ कामी खल स्खल,
मैथुन चक्रक मधु-बंधन मे
दुहु गँथल-गुथल युगनद्ध बनल ।" (१८)



"छन्नोपान्तः परिणतफलद्योतिभिः काननाम्रै
स्त्वय्यारूढे शिखरमचलः स्निग्धवेणीसवर्णे ।
नूनं यास्यत्यमरमिथुनप्रेक्षणीयामवस्थां
मध्ये श्यामः स्तन इव भुवः शेषविस्तारपाण्डुः ।।"

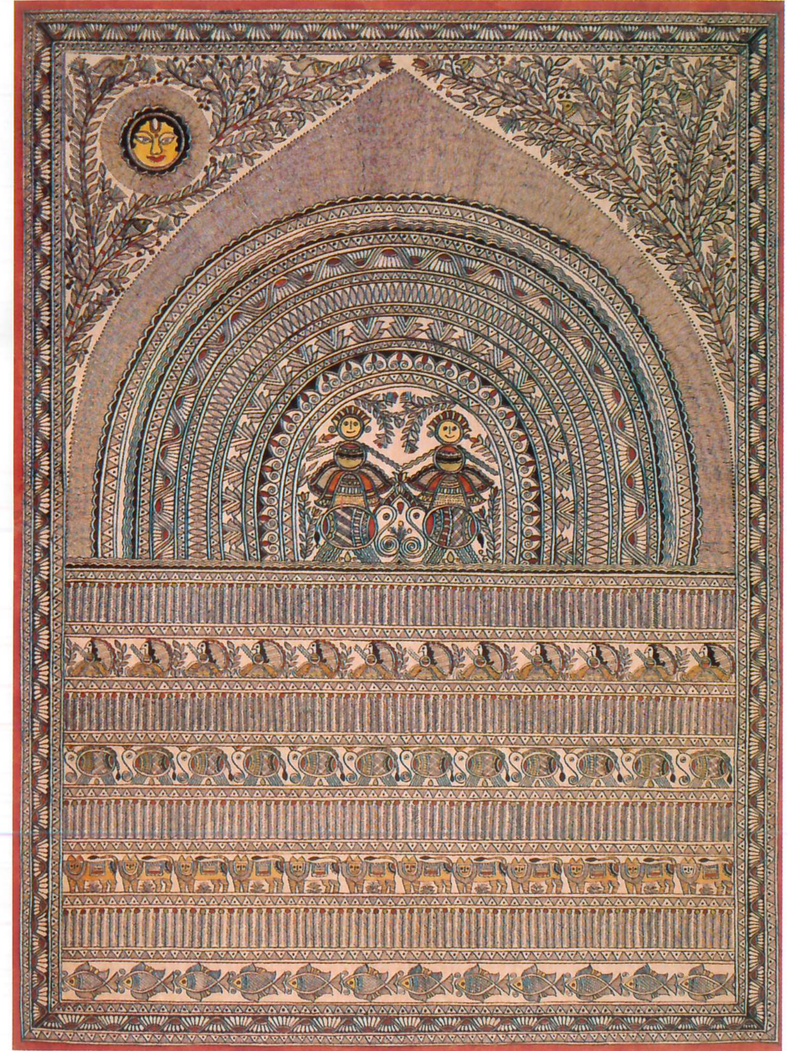
"आम्रकूट सँ सत्वर गतिएँ
बाट टपैत जाउ ओहि वन मे,
जतए केलि मे मुक्त मगन रत
वनचर-वनिता कुंज-भवन मे।"

"किछु क्षण ओहि ठाँ कुंज भवन मे
विलमि सुजान अकथ सुख पाबिह',
एक बेर पुनि गरजि-बरसि कै
हल्लुक भै आगाँ दिश बढ़िह'।"

"आगाँ विंध्याचल तराइ मे
शैल-खण्ड सौं मर्दित रेवा,
फेनिल भै कत धार विभाजित
अनमन भष्म रचल गजदेवा।" (१५)



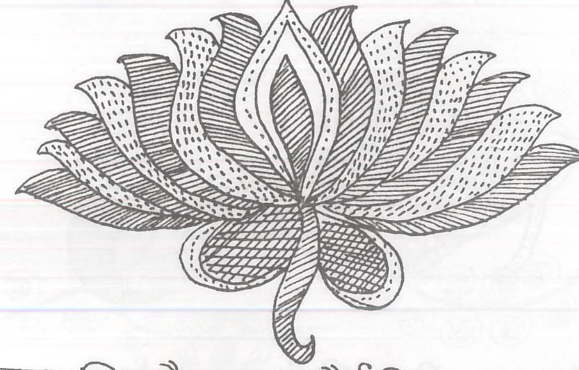
"स्थित्वा तस्मिन्वनचरवधूभुक्तकुञ्जे मुहूर्तं
तोयोत्सर्गद्रुततरगतिस्तत्परं वर्त्म तीर्णः।
रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विशीर्णां
भक्तिच्छेदैरिव विरचितां भूतिमङ्गे गजस्य।"



"हे घन, विपुल जम्बुवन - वाधित
नर्मदाक जल जम्बु-रस- मिश्रित,
भैषज बुझि भरि पोख पीबि जल
वन- गज मद सौं बनल सुवासित।"

"भरल पेट औषधि- जलपाने
वात- व्याधि केर डर नहि माने,
चढ़ल वायु पर हाँकैत जयब:
बनल ओजनगर अपनहि भाने।"

"खाली पेट भग्न मन मुरुघल
हल्लुक नर की पाबये मान,
जे अछि भरल ओजनगर से अछि
तेकरहि दैछ जगत सम्मान।" (२०)

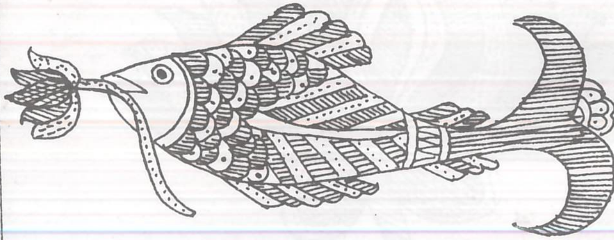


"तस्यास्तिक्तैर्वनगजमदैर्वासितं वान्तवृष्टि-
र्जम्बू कुञ्जप्रतिहतरयं तोयमादाय गच्छे:।
अन्त:सारं घन तुलयितुं नानिल:शक्ष्यति त्वां
रिक्त: सर्वो भवति हि लघु: पूर्णता: गौरवाय।"

"मिथिला मे अछि कहबी प्रसिद्ध
एक्कहि झटहा मे तीन आम,
तहिना भौंरा, हाथी, मृग सँ
बुधिगर सुतारिह' अपन काम।"

"जौं एक बेर फुँहिआ देबहक
शीतल झीसी नहुएँ- नहुएँ,
तबधल धरती गमकत सोन्हगर
सुंघि चलत त्रयी आगुए-आगुए।"

"सुंघि हँसत कदम्बक पम्ह
पीत केसर सन रोआँ,
उपगत पाँकक आँकु
बाट बुझ्नु नाकक सोझाँ।" (२१)



"नीपं दृष्ट्वा हरितकपिशं केसरैरर्धरूढै
राविर्भूत प्रथम मुकुलाः कन्दलीश्चानुकच्छम्।
जग्ध्वारण्येष्वधिकसुरभिं गन्धमादाय चोर्व्याः
सारङ्गास्ते जललवमुचः सूचयिष्यन्ति मार्गम्॥"

"अहा! कोना चातक मुँह बौने
बरखा-ठोप पिबइ अछि!
बगुला-बगुलिन पंक्तिबद्ध भै
प्रेमालाप करइ अछि!"

"एक तँ सिद्ध दोसर रस-भोगी
पावस अवश अघोरी,
मन-चाहय गर्जन नहि मानी
अनुचित थिक बरजोरी।"

"तेहि खन कड़कड़ ध्वनि ठनका सँ
ठनकि प्रचण्ड गरजिह',
भय-कम्पित सिद्धिन हिय लागत
सिद्धक कृतज्ञता पाबिह'।" (२२)



"अम्भोबिन्दुग्रहणचतुरांश्चातकानवीक्षमाणाः
श्रेणीभूताः परिगणनया निर्दिशन्तो बलाकाः।
त्वामासाद्य स्तनितसमये मानयिष्यन्ति सिद्धाः
सोत्कम्पानि प्रियसहचरी सम्भ्रमालिङ्गितानि॥"

"हे मित्र, तोंही अवलम्ब हमर
कहितहुँ लाज लगइ अै,
मौन रहब से मन नहि मानय
बाजब कठिन लगइ अै।"

"फूल-पात सौं मातल पर्वत
मह-मह गन्ध बसातक,
सजल नयन पथ हेरय तोहर
मोर-मारनी-चातक।"

"बाट-घाट अगुताइ ने जानय
स्वागत सम्हक पाबिह'
केहना नजरि बचाय ओतं' सँ
शीघ्रहि डेग बढ़बिह'।" (२३)



"उत्पश्यामि द्रुतमपि सखे मत्प्रियार्थं यियासोः
कालक्षेपं ककुभसुरभौ पर्वते पर्वते ते।
शुक्लापाङ्गैः सजलनयनैः स्वागतीकृत्य केकाः
प्रत्युद्यातः कथमपि भवान्गन्तुमाशु व्यवस्येत्॥"

"अगिला तोहर पथ दशार्ण छ'
बाट तोंहूँ अनुमानि सकइ छ',
तोहर अबैआ सुनितहि सभ दिश
बदलि रहल किछु, जानि सकइ छ'।"

"जखनहि अयबः देशक लगीच
देखिह', पीयर द्युति पसरि रहल,
वन उपवन सौं चौबट्टी धरि
पीयर केतकी अधि फलकि रहल।"

"कउआ-मैना खोंता पाड़त
जामुन ओढ़त कम्मल कारी,
मानस-सर धरि जायत संगे
हंसहु विलमत आबि अगाड़ी।" (२४)



"पाण्डुच्छायोपवनवृतयः केतकैः सूचिभिन्नै-
र्नीडारम्भैर्गृहबलिभुजामाकुलग्रामचैत्याः।
त्वय्यासन्ने परिणतफलश्यामजम्बूवनान्ताः
संपत्स्यन्ते कतिपयदिनस्थायिहंसा दशार्णाः॥"

"देखिते-सुनिते बढ़िह' आगाँ
विख्यात राजधानी विदिशा,
वैभव-ऐश्वर्यक धाम एतए
सभ खन उत्सव, सभ तरि जलसा।"

"जे दुर्लभ कोनो आन ठाम
से सुलभ लब्ध सभ सुख एहि ठाँ,
भरि पोख अछिनरे भोगि लिह'
यौवन-विलास-फल नीक जेकाँ।"

"चंचल लट जेना सुमुखि मुख पर
तहिना उमतल बेतवा कलकल,
तों उमड़ि-घुमड़ि तट पर गाबिह'
अधरामृत बुझि, पिबिह' मृदुजल।" (२५)



"तेषां दिक्षु प्रथित विदिशालक्षणां राजधानीं
गत्वा सद्यः फलमविकलं कामुकत्वस्य लब्धा
तीरोपान्तस्तनितसुभगं पास्यसि स्वादु यस्मा-
त्सभ्रूभङ्गं मुखमिव पयो वेत्रवत्याश्चलोर्मि ॥"

"अछि खास एकटा ठौर ओत'
'नीचैं' पहाड़ केर ढार जत',
पुष्पित कदम्ब सिहरत-विकसत
जँ चरण तोहर ओहि ठाँ पड़त'।"

"जँ विश्रामक इच्छा जाग'
नहि रंचमात्र संकोच करी,
ओहि ठाँ अछि अगनित खोहबनल
गणिका-रसिका सँ लाज कथी?"

"बड़-बड़ नागर भेटथुन ओहि ठाँ
मातल गणिका-भुजबंधन मे,
उद्दाम यौवनक हाट जतय
सुरभित उपवन अलि-गुंजन मे।" (२६)



"नीचैराख्य गिरिमधिवसेस्तत्र विश्रामहेतो-
स्त्वत्संपर्कात्पुलकितमिव प्रौढ़पुष्पैः कदम्बैः।
यः पण्यस्त्रीरतिपरिमलोद्गारिभिर्नागराणा-
मुद्दामानि प्रथयति शिलावेश्मभिर्यौवनानि ॥"

"मन भरि विश्रामक बाद जखन
टनमन-खनहन भ' जइह',
लिह' अडेंठी-मोड़,
बाट आगाँ के धरिह' ।"

"ठाम-ठीम वन-नदी
नदी-तट पर फुलबाड़ी,
फुलबाड़ी मे पटबैत होयती
जूही विपिन-कुमारी ।"

"रौद-घाम सँ लोहछल बाला
अपनहि छाँहि जुड़बिह',
तुहिन हाथ सँ छूबि कपोलक
तातल घाम सुखबिह' ।" (२७)



"विश्रान्तः सन्व्रज वननदीतीरजातानि सिञ्च-
न्नुद्यानानां नवजलकणैर्यूथिकाजालकानि ।
गण्डस्वेदापनयनरुजाक्लान्तकर्णोत्पलानां
छायादानात्क्षणपरिचितः पुष्पलावीमुखानाम् ॥"

"विंध्यक उत्तर निर्विंध्य नदी
तइ सौं पूरब उज्जयिनी अछि,
धारक पश्चिम अछि उत्तरपथ
जेहि पथ पर बसल अवन्ती अछि ।"

"अलकागामी हे मित्र यदपि
ई बाट कठिन आ दुस्तर अछि,
तद्यपि चाहथि दुर्लभ दर्शन
तिनका हित ई श्रेयस्कर अछि॥"

"उच्च अटारी बैसलि नागरि
बिजुरी झट छिटकाबिह',
आँखि दाबि जँ देखथुन ऊपर
तखनहि आँखि लड़बिह' ।" (२८)



"वक्रः पन्था यदपि भवतः प्रस्थितस्योत्तराशां
सौधोत्सङ्गप्रणयविमुखो मा स्म भूरुज्जयिन्याः ।
विद्युद्दामस्फुरितचकितैस्तत्र पौराङ्गनानां
लोलापाङ्गैर्यदि न रमसे लोचनैर्वञ्चितोऽसि ॥"

"हे घन, क्वणित लहरिक ध्वनि सन
हँसक पाँती डँड़कस अनमन,
यौवन-मद-मातलि निर्विंध्या
पाथर पर छ्हलय उमतल तन।"

"खन चित, खन पट, अविरल हलचल
तनकृश, रति-ज्वर, उन्मन प्रतिपल,
आवर्त्त-भमर सन मदिर नाभि
लज्जा-निवृत्त कामार्त्त बनल।"

"हे मित्र, नारि नहि मुँह खोलय
इंगित प्रणयक अनुभाव करै,
भरि घोँक पीबि जलतृप्त होअ'
बरस' झमकारि हुनक सुख लै।" (२९)

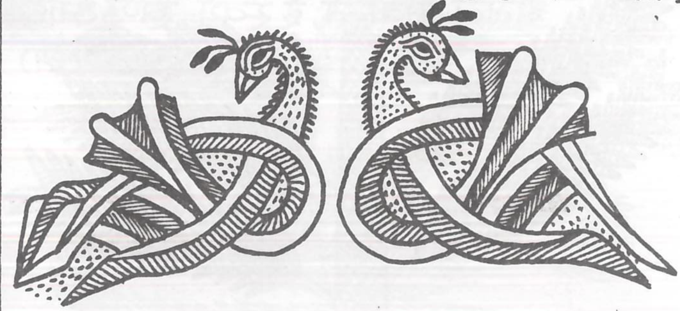


"वीचिक्षोभस्तनित विहगश्रेणिकाञ्चीगुणायाः
संसर्पन्त्याः स्खलित सुभागं दर्शितावर्तनाभेः।
निर्विन्ध्यायाः पथि भव रसाभ्यन्तरः सन्निपत्य
स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु॥"

"हे मीत, जे छलि कहियो गतगरि
भल देहयष्टि, मन भरल-पुरल,
से आइ बनल कृशकाय अतन
विरहाग्नि-दग्ध, गति-गात टुटल।"

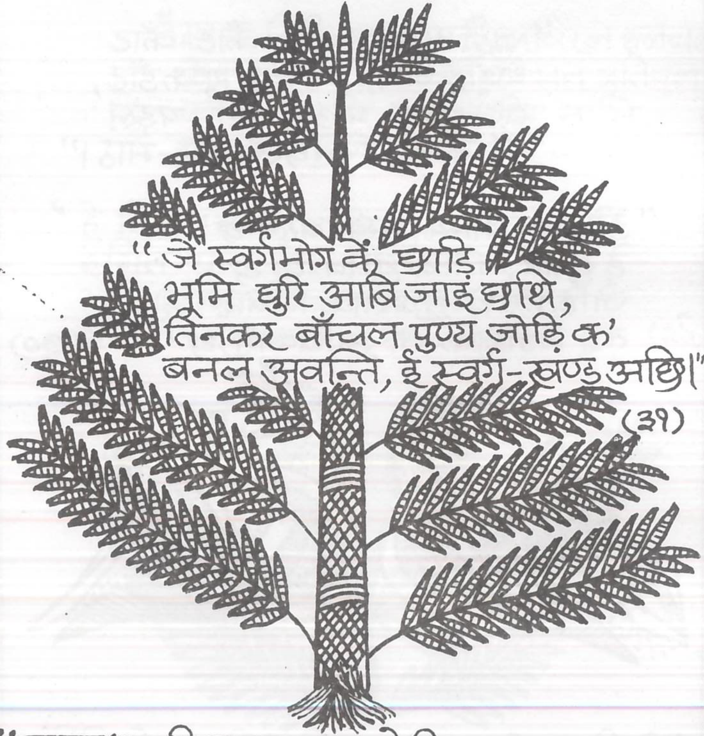
"जुट्टी सन दुब्बरि, काँट-काँट
थोड़हि जल, जेना शुष्कडाँट,
तट-वृक्षक पीअर पात पड़ल
जँ रुग्न, पिरोंछल साँठ-माठ।"

"ओ तोहर भाग्य-सुख-बरती छ'
हे सुभग, नित्य शुभकांक्षी छ',
जेहि विधि कृशताक निवारण हो
तइ बेओंतक तों अधिकारी छ'।" (३०)



"वेणीभूतप्रतनुसलिलाऽसावतीतस्य सिन्धुः
पाण्डुच्छाया तटरुहतरुभ्रंशिभिर्जीर्णपर्णैः।
सौभाग्यं ते सुभग, विरहावस्थया व्यञ्जयन्ती
कार्श्यं येन त्यजति विधिना स त्वयैवोपपाद्यः॥"

"हे मेघ, जखन जैबह अवन्ति
देखबह ओहि ठाँ कत वृद्ध सुजन,
उदयन-कथाक जे कोविद छथि
जानथि वासवदत्ताक हरण ।"



"जे स्वर्गभोग कें छाड़ि
भूमि घुरि आबि जाइ छथि,
तिनकर बाँचल पुण्य जोड़ि क'
बनल अवन्ति, ई स्वर्ग-खण्ड अछि।"
(३१)

"प्राप्याऽवन्तीनुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धान्
पूर्वोद्दिष्टामनुसर पुरीं श्रीविशालां विशालाम् ।
स्वल्पीभूते सुचरितफले स्वर्गिणां गां गतानां
शेषैः पुण्यैर्हृतमिव दिवः कान्तिमत् खण्डमेकम् ॥"

"ताही उज्जयिनिक एक नगर
जग मे ख्यात विशाला,
शिप्राक धार अछि ओतय
जतय कत गगनचुंबि नव शाला ।"

"हे मेघ, ओतय नित उषःकाल
सारस-रव सौं पौ फाट्य,
रति-रण-क्लान्त युगल प्रेमीकें
तुरही बजाय हुलसाबय ।"

"जहिना पुनि-पुनि रति-रभस हेतु
कामी कामिनि गोहराबय,
विकसित कमलक परिमल वासित
शिप्राक वायु तन भावय ।"
(३२)

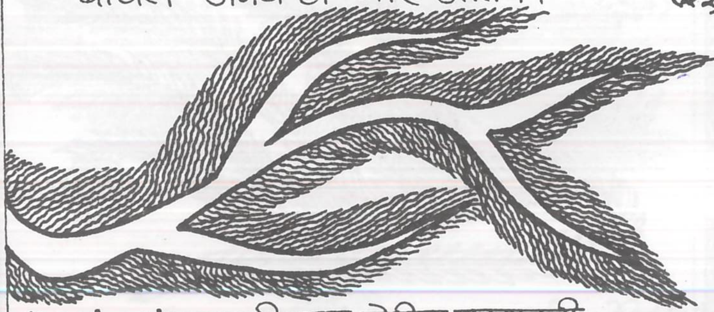


"दीर्घीकुर्वन्पटु मदकलं कूजितं सारसानां
प्रत्यूषेषु स्फुटितकमलामोदमैत्रीकषायः ।
यत्र स्त्रीणां हरति सुरतग्लानिमंगानुकूलः
शिप्रावातः प्रियतम इव प्रार्थनाचाटुकारः ॥"

"ओहि उज्जयिनिक सभ हाट-बाट
समृद्धि भरल नगरक बजार,
सोना-चानी केर बात कथी ?
अगबे रत्नक लागल पथार।"

"कतहु लागल मूङ्गाक ढेर
पोखराज पोआरक टाल जेकाँ,
पन्ना दुर्वा-हरिअर कचोर
छिटकय द्युति मोरक पाँखि जेकाँ।"

"अगबे मुक्ताक अमार कतहु
सभटा मणि-माणिक भीड़ रहैय,
रत्नाकर रत्न-विहीन भेला
बाँचल अगबे टा नीर ओतय।" (३३)



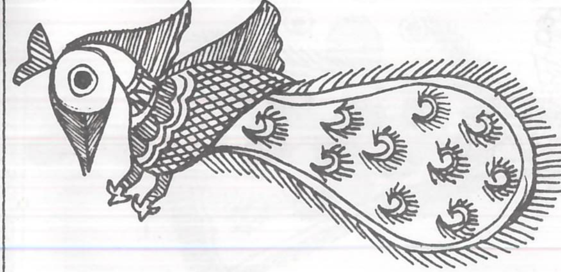
"हारांस्तारांस्तरलगुटिकान् कोटिशः शङ्ख-शुक्तीः
शष्पश्यामान् मरकतमणानुन्मयूखप्ररोहान् ।
दृष्टवा यस्यां विपणिरचितान् विद्रुमाणांच भङ्गान्
संलक्ष्यन्ते सलिलनिधयस्तोयमात्रावशेषाः॥"



"हे मेघ, कथा अछि बड़ प्रसिद्ध
उज्जयिनिक लोक सुनाबइ छथि,
बाहर सौं आबथि आगन्तुक
तिनकहु रुचि सँ सब बतबइ छथि।"

"एहि ठाम छला राजा प्रद्योत
तिनकर बेटी वासवदत्ता,
उदयन तिनकर अपहरण कैल
नहि रोकि सकल कोनो सत्ता।"

"राजाक सोनहुला ताड़क वन
तइ मे नलगिरि हाथी बान्हल,
हाथी देलक गाछ उखाड़ि
घूमय सभ दिशि मदमत्त बनल।" (३४)

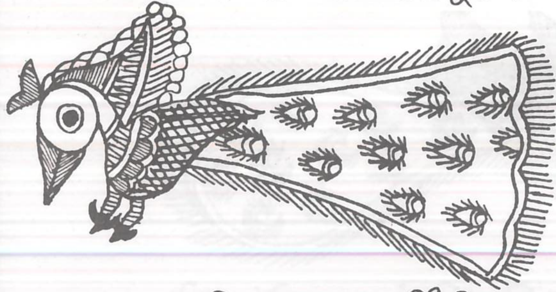


"प्रद्योतस्य प्रियदुहितरं वत्सराजोऽत्र जह्रे
हैमं तालद्रुमवनमभूदत्र तस्यैव राज्ञः,
अत्रोद्भ्रान्तः किल नलगिरिः स्तम्भमुत्पाट्य दर्पा-
दित्यागन्तून् रमयति जनो यत्रबन्धूनभिज्ञः॥"

"हे मित्र, ओतय उज्जयिनी मे
घोड़ा सभ हरिअर-श्याम रंग,
सूर्यक घोड़ा सौं भिड़इ वला
चमचम दमकै सभ अंग-अंग।"

"पर्वत सन मिहगर गज-मतंग
मद-बल सौं लथपथ अति मिसिण्ड,
तोरहि समान मद-वृष्टिकरय
चिक्कारय जौं दामिनि प्रचण्ड।"

"जे योद्धा छथि से छथि अजीत
टिटकारि देथि जे रावण कें,
जे चन्द्रास-क्षत-गात वरथि
मोजर नहि दै आभूषण कें।" (३५)

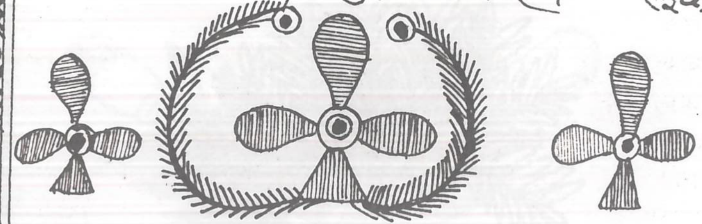


"पत्रश्यामा दिनकरहयस्पर्द्धिनो यत्र वाहाः
शैलोदग्रास्त्वमिव करिणो वृष्टिमन्तः प्रभेदाद्।
योधाग्रण्यः प्रतिदशमुखं संयुगे तस्थिवांसः
प्रत्यादिष्टाभरणरुचयश्चन्द्रहासव्रणाङ्कैः॥"

"कखनहुँ द्रुतगति कखनहुँ मन्दहि
देखिते-सुनिते मन लगत',
घुमिह' उज्जयिनिक नगर-वीथि
बाटक थकान चलि जयत'।"

"नव नागरि धूपक धूआँ सौं
नित केस अपन परिचारय,
बैसि भरोखा वातायन सौं
लट बाहर लटकाबय।"

"आल रंग-रंजित पद-पंकज
कामिनि ओहि ठाँ देखिह',
पोसुआ मोर, तोरहि प्रिय भ्राता
नाचत से सुख पाबिह'।" (३६)



"जालोद्गीर्णैरुपचितवपुः केशसंस्कारधूपै-
र्बन्धुप्रीत्या भवनशिखिभिर्दत्तनृत्योपहारः।
हर्म्येष्वस्याः कुसुमसुरभिष्वध्वखेदं नयेथा
लक्ष्मीं पश्यँल्ललितवनितापादरागाङ्कितेषु॥"

"हे मेघ, नील तन-कान्ति तोहर
शिव-नीलकण्ठ-गण देखथुन,
जानि समाङ अपन शुभ-चिन्तक
आदर-पूर्वक बइसैथुन।"

"पद्मराग-चन्दन तन लेपल
युवति करय स्नाने,
गन्धवती जल बनल सुवासित
पवन कैल अनुपाने।"

"शीतल वासल पवन-प्रकम्पित
उपवन मध्य ओतहि अछि,
त्रिभुवन-नाथ शिवक तीर्थस्थल
महाकाल कहबइ अछि।" (३७)



"भर्तुः कण्ठच्छविरिति गणैः सादरं वीक्ष्यमाणः
पुण्यं यायास्त्रिभुवनगुरोर्धाम चण्डीश्वरस्य।
धूतोद्यानं कुवलयरजोगन्धिभिर्गन्धवत्या-
स्तोयक्रीडानिरतयुवतिस्नानतिक्तैर्मरुद्भिः॥"

"जलधर-नभचर, दिनगर कखनहुँ
जँ महाकाल पुगि जइह',
जा'धरि दिनकर अस्त होथि नहि
ताबत तों ओहि ठाम बिलमिह'।"

"बड़ महात्म तहिना अछि रोचक
सन्ध्या-पूजन ओहि ठामक,
बम-बम-बम स्तोत्र नचारी
डमरू धुन अभिरामक।"

"समय पाबि पट खुलत, भक्तगण
बाजा सभ झमकारत,
तैखन ढन-ढन ढमकि ठनकिह'
मधुर नगाड़ा बाजत।" (३८)

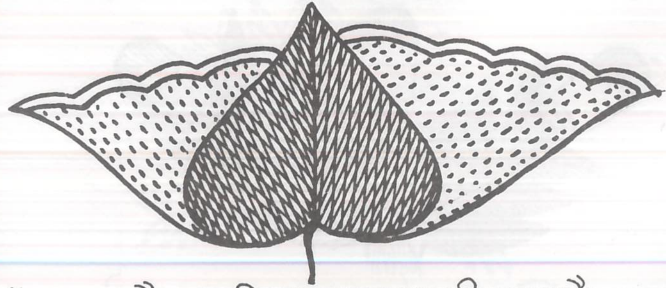


"अप्यन्यस्मिञ्जलधर महाकालमासाद्य काले
स्थातव्यं ते नयनविषयं यावदत्येति भानुः।
कुर्वन्संध्याबलिपटहतां शूलिनः श्लाघनीया-
मामन्द्राणां फलमविकलं लप्स्यसे गर्जितानाम्॥"

"हे मेघ, महाकालक मन्दिर मे
सांध्य-पूजनक दृश्य अनूपम,
गीत- नृत्य भक्तिक संगम मे
डुबकी देब सुखद स्वर्गोपम ।"

"नृत्यरता गणिकाक डाँड़ मे
मणिमय डँड़कस शोभा पाबय,
जौं-जौं पद निक्षेप करै तौं
झुनुर- झुनुर झम- झम धुनिबाजय।"

"भरिगर दण्ड चँओर के भारी
भाँजि श्रान्त थाकल सुकुमारी,
तिनका पर बरस' फोहार दै
पाबिह' तिनक कटाक्ष सुखकारी ।" (३९)

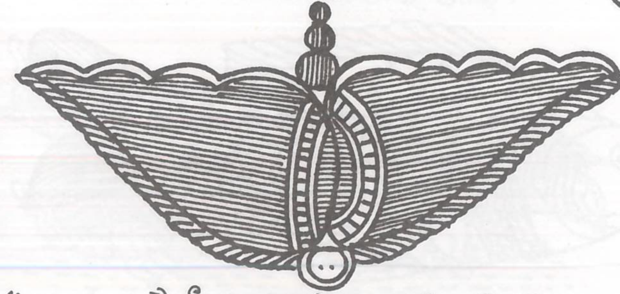


"पादन्यासैः क्वणितरशनास्तत्र लीलावधूतै-
रत्नच्छायाखचितबलिभिश्चामरैः क्लान्तहस्ताः ।
वेश्यास्त्वत्तो नखपदसुखान् प्राप्य वर्षाग्रबिन्दु-
नामोक्ष्यन्ते त्वयि मधुकरश्रेणिदीर्घान्कटाक्षान् ॥"

"हे घन, पूजा पूर्ण भेला पर
शिव उठता नाचइ ले'औचक,
तों साँझक लाली सन टुहटुह
धारण करिह' रंग अदूलक ।"

"कथा सुनल अछि, मारि गजासुर
भीषण रूप सदाशिव धैलनि,
कारी खाल रक्त सँ भीजल
धारण कै शिव ताण्डव कैलनि ।"

"कारी तोहर वर्ण ताहि पर
लाल रंग तेहने सन लागत,
शिव-इच्छा तों पूरा करब'
पार्वती - मन अति सुख लागत ।" (४०)

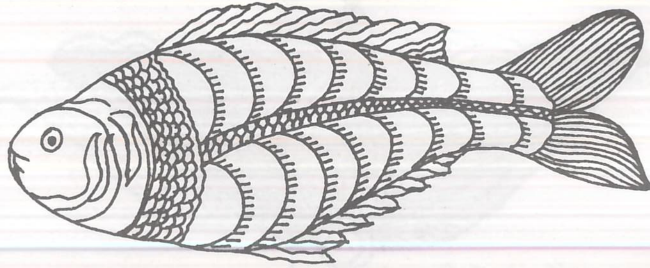


"पश्चादुच्चैर्भुजतरुवनं मण्डलेनाभिलीनः
सान्ध्यं तेजः प्रतिनवजपापुष्परक्तं दधानः ।
नृत्यारम्भे हर पशुपतेरार्द्रनागाजिनेच्छां
शान्तोद्वेगस्तिमितनयन दृष्टभक्तिर्भवान्या ॥"

"हे सित-मित, मधुचित, मनशुचि
तों भावक भुखल, पिआसल गन्धक,
तोरा देखि जीवय कवि-प्रेमी
तों रसमय, रतिमय, गुणग्राहक।"

"राति निशीथ अन्हरिया गुज-गुज
पंथ-अपंथ कोना भटकारत,
स्वर्ण-रेख 'बिजुरी- प्रकाश सौं
अभिसारिका अपन हित साधत।"

"राजमार्ग पर पसर बारने
जाइत हेती जौं कोनो प्रेमिका,
बिना गरजने बिना बरसने
छिटकाबिह' किञ्चित बिजलोका।" (४१)

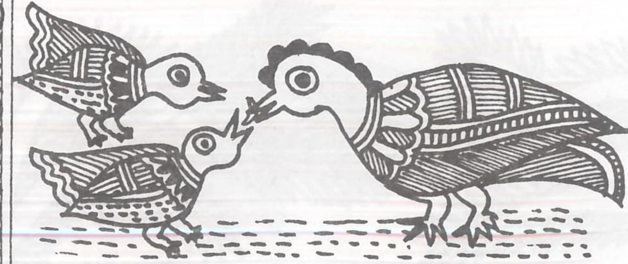


"गच्छन्तीनां रमणवसतिं योषितां तत्र नक्तं
रुद्धालोके नरपतिपथे सूचिभेद्यैस्तमोभिः।
सौदामन्या कनकनिकषस्निग्धया दर्शयोर्वीं
तोयोत्सर्गस्तनितमुखरो मा स्म भूर्विक्लवास्ताः॥"

"हे बिजुरिकान्त दामिनि-बल्लभ
छथि तोहर प्रिया अनुसंगिनि,
केतबो बलमति तइयो कोमल
नारि-स्वभाव मृदुल अनुरञ्जिनि।"

"चलिते- खटिते नहि रही सदति
हुनकहु रुचि कें ठेकनाबी,
ठौर भेटय त' किछु मुहुर्त्त
पलखति मे राति बिताबी।"

"जौं नीक भेट' कोठाक छात
जइ ठाँ परबा छुटकइ अछि,
कात-करोट दिह' ओहि ठाँ
जा' दिनकर छितिज उगइ अछि।" (४२)

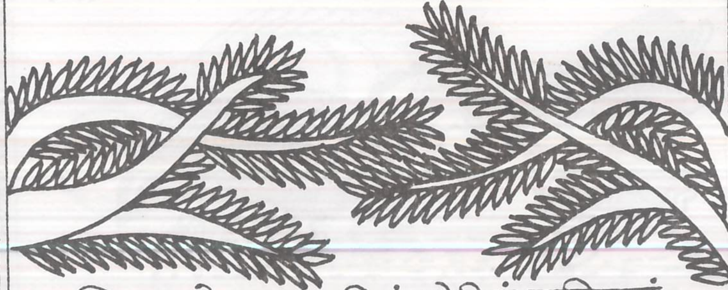


"तां कस्यांचिद्भवनवलभौ सुप्तपारावतायां
नीत्वा रात्रिं चिरविलसनात्खिन्नविद्युत्कलत्रः।
दृष्टे सूर्ये पुनरपि भवान् वाहयदध्वशेषं
मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्याः॥"

"जिनकर वनिता होथि खण्डिता
रातुक रूसल प्रणय दुखारी,
तिनका प्रातहि बौंसि दुलारी
तखने आगाँ डेग बढ़ाबी।"

"कमलिनि मन मे भेद सर्वदा
अस्ताचल मे सौतिनि सोहन,
हिमकण-अश्रु भरल तैं दृग मे
सूर्य करथि नित मान-मनाओन।"

"तैं प्रियवर, तों भोरे उठि क'
पहिने अपन सुमुखि परतारिह',
दिनकर-कमलिनि भेंट सँ पहिने
नभ मे बाट अपन तों धरिह'।" (४३)

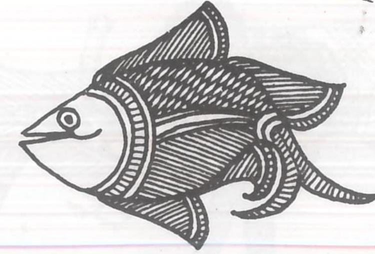


"तस्मिन्काले नयनसलिलं योषितां खण्डितानां
शान्तिं नेयं प्रणयिभिरतो वर्त्म भानोस्त्यजाशु।
प्रालेयास्रं कमलवदनात्सोऽपि हर्तुं नलिन्याः
प्रत्यावृत्तस्त्वयि कररुधि स्यादनल्पाभ्यसूयः॥"

"हे प्रिय, उज्जयिनी सँ आगाँ
कनिञे हँटि क' उत्तर भर मे
तोरहि सन निर्मल अकलुष अछि
नदी गम्भीरा सूतल पथ मे।"

"जखने जयब' ल'ग नदी के
छाँहि तोहर पइसत अन्तस मे,
आँखि बचा क' जा नहि सकब'
छाड़ि पयस्विनि वारि वयस कें।"

"श्वेत भेंट सन उज्जर दपदप
वारि अमल अवगाहन करिह',
चानी सन कुदकैत माछ कें
करतब देखि मोद मन भरिह'।" (४४)



"गम्भीरायाः पयसि सरितश्चेतसीव प्रसन्ने
छायात्मापि प्रकृतिसुभगो लप्स्यते ते प्रवेशम्।
तस्मादस्याः कुमुदविशदान्यर्हसि त्वं न धैर्या-
न्मोघीकर्तुं चटुलशफरोद्वर्तनप्रेक्षितानि॥"

"कतहु वक्र, चिक्कन - चुनमुन तट
शान्त निभेर सुतल वनिता सन,
खुरलुच्ची बेंतक शाखा सभ
झुकल धार दिश छुबय जेना तन।"

"सरिता देविक अधगोलौन तट
बुझि नितम्ब सन उमतल-उभरल,
तट पर बेंत निहुरि कै जल मे
टारय नील वसन तन उघरल।"

"पोछल-पाछल जाँघ अनावृत
टेङरा माछ जेना अण्डायल,
पूरह मौन निमन्त्रण प्रणयक
के नर रहि लिप्सा सँ बाँचल?" (४५)

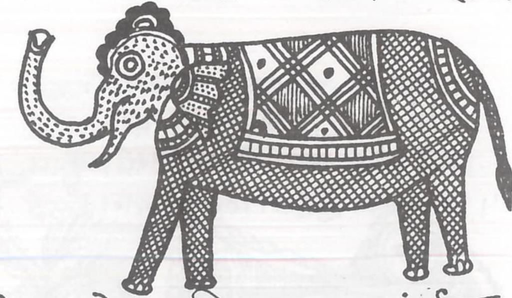


"तस्याः किंचित्करधृतमिव प्राप्तवानीरशाखं
नीत्वा नीलं सलिलवसनं मुक्तराधी नितम्बम्।
प्रस्थानं ते कथमपि सखे, लम्बमानस्य भावि
ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः?"

"गम्भीरा सँ विदा माँगि तों
आगाँ देवगिरी धरि जइहऽ',
बाट कने उकडू अछि तइयौ
अपन लक्ष्य बुझि चलिते रहिहऽ'।"

"एक बेर पुनि बरखा करिहऽ'
ठहरि-ठहरि जलधार खसबिहऽ',
सोन्हगर गंध उठत वन सगरो
कृष्ण वायु कें शीतल करिहऽ'।"

"गज-समूह सूँघत माटी के
सूँढ़ उठाय करत ध्वनि सों-सों,
शीतल वायु पकाओत गुल्लरि
बीअनि झोंकत तोरा प्रेम सौं।" (४६)



"त्वन्निष्यन्दोच्छ्वसितवसुधागन्धसंपर्करम्यः
स्रोतोरन्ध्रध्वनितसुभगं दन्तिभिः पीयमानः।
नीचैर्वास्यत्युपजिगमिषोर्देवपूर्वं गिरिं ते
शीतो वायुः परिणमयिता काननोदुम्बराणाम्॥"

" एहि ठाँ एगो कथा कहइ छी
षण्मुख कार्त्तिक कोना जनमला,
कोन हेतु अवतार लेलनि ओ
काजक बाद कत'जा बसला।"

"तरकासुर छल बड़ अगिमुत्तू
देव-मनुज कें किछु नहि बूझय,
शिव-अराधना कैल देवगण
कोना शमन हो, बाट ने सूझय।"

" सोचि-विचारि कहल शिव शंकर
एहि शत्रुक होयत प्रतिकार,
जन्म लेता नव सुर-सेनापति
हमरहि दोसर रूप कुमार।"

"तरकासुर-वधकर्त्ता जनमय
वीर्य उमा मे कैल आधान,
सहि नहि सकली तेज उमा तब
अग्निक मुँह मे कैल निदान।"

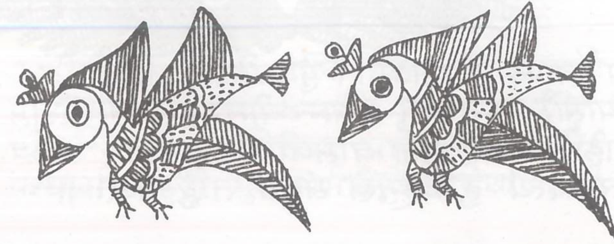


"वीर्यक ताप असाध्य तेहन छल
अग्निहुँ नहि धारण कै सकलथि,
हारि तखन हर अपनहि हाथें
गंगा-तट शर-वन मे राखलथि।"

"खसल वीर्य छौ ठाम ओतय
छौ-मुख शिशु जनमल,
चेहों-चेहों कानल ओ बच्चा
वन-प्रान्तर चिहुँकारें गूँजल।"

"वनदेवी कृतिका छौ बहिनी
दौड़लि नवजातक सुनि क्रन्दन,
कार्त्तिकेय कहि हृदय लगाओल
गूँजल देवलोक सुर-वन्दन।"

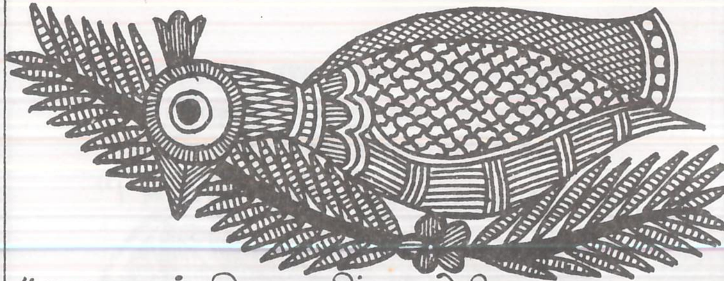
"प्रकट भेला शिव उमा संग मे
देखितहिं बच्चा भेल सिआन,
मातु-पिता कहि सीस झुकाओल
देलनि शिव सभ सैन्य-विधान।"



"घोर युद्ध मे परम तेज सौं
मारि तारकासुर शिव- नन्दन,
गेला देवगिरि धाम
मोर चढ़ि असुर-निकन्दन।"



"हे घन, ओहि ठाँ देवपुरी मे
नित्यहु बसथि षडानन,
नभ- गंगाजल-सिक्त पुष्पबनि
अर्पित भै करिह' शुभ गायन।" (४७)



"तत्र स्कन्दं नियतवसतिं पुष्पमेघीकृतात्मा
पुष्पासारैः स्नपयतु भवान्व्योमगङ्गाजलाऽऽर्द्रैः।
रक्षाहेतोर्नवशशिभृता वासवीनां चमूना-
मत्यादित्यं हुतवहमुखे संभृतं तद्धि तेजः॥"

"स्वर्ग समान ओतय पर्वत पर
पार्वतिक परिवार रहइ अछि,
भोलाबाबा दुनू परानी
कार्त्तिकेय संग मोर रहइ अछि।"

"शिव-मूर्धा पर स्थित शशि सौं
शुभ्र ज्योत्सना पसरि रहल अछि,
दुधिया ज्योति नहाय शिखण्डी
पोछल-पाछल चमकि रहल अछि।"

"ढन-ढनाक गर्जन सुनि दौड़त
नाचत 'केका-केका' ध्वनिकें,
रंग-विरंगक पाँखि खसत भू
पारबती सजती पंखी लै'।" (४८)



"ज्योतिर्लेखावलयि गलितं यस्य बर्हं भवानी
पुत्रप्रेम्णा कुवलयदलप्रापि कर्णे करोति।
धौताऽपाङ्गं हरशशिरुचा पावकेस्तं मयूरं
पश्चादद्रिग्रहणगुरुभिर्गर्जितैर्नर्तयेथाः॥"

"राजा रन्तिदेव दशपुर के
भारी यज्ञ गोमेध रचौलनि,
कोटि - कोटि गौ-आलम्भन सौं
चर्मवती नव धार बहौलनि।"

"पूजा- अर्चा कै स्कन्दक
जैखन तों आगाँ दिश बढ़ब',
मेघ देखि वीणा लै भागत
सिद्ध-युगल, तेम्हरे तों जयब'।"

"रन्तिदेव बड़ छला प्रतापी
तिनकहि कीर्त्ति नदी अछि चम्बल,
तिनकर आदर - मान करक हित
उतरि कर' अर्पित वर्षा-जल।" (५१)



"आराध्यैनं शरवणभवं देवमुल्लङ्घिताध्वा
सिद्धद्वन्द्वैर्जलकणभयाद्वीणिभिर्मुक्तमार्गः।
व्यालम्बेथाः सुरभितनयालम्भजां मानयिष्यन्
स्रोतोमूर्त्या भुवि परिणतां रन्तिदेवस्य कीर्त्तिम्॥"

"हे घन, लोक - प्रसिद्ध कथन अछि
तों कृष्णक ई रंग चोरैलह,
पोति शरीर सगर एकवर्णा
जलधर, तों घन-श्याम कहैलह।"

"एहि बातक किछु रोख ने करिह'
अपन काज मे लागल रहिह',
गोल- मोल भै सटल नीर सौं
इच्छा भरि अमृत-पय पिबिह'।"

"व्योम-विहारी सिद्ध लोकनि जौं
नीचाँ निहुरि भूमि पर देखता,
इन्द्रनीलमणि नग माला मे
गाँथल अछि, ओ मन मे बुझता।" (५०)



"त्वय्यादातुं जलमवनते शार्ङ्गिणो वर्णचौरे
तस्याः सिन्धोः पृथुमपि तनुं दूरभावात्प्रवाहम्।
प्रेक्षिष्यन्ते गगनगतयो नूनमावर्ज्य दृष्टी-
रेकं मुक्तागुणमिव भुवः स्थूलमध्येन्द्रनीलम्॥"

"धारक पार नगर दशपुर अछि
सभ तरहें समृद्ध-सुखी अछि,
चिक्कन-चुनमुन ठाँओ देल पर
जेना कोनो अरिपन पाड़ल अछि।"

"बरख अवधि सौं बाट निहारय
वनिता सभ लै आस नयन मे,
कतेक भाव-अनुभाव-विभावक
काव्य रचल अछि हुनका मन मे।"

"तोरा देखि उन्मीलन करती
प'ल तानि जौं ऊपर तकती,
श्वेत-श्याम-अरुणाभ रंग सौं
पहिने तोहर स्वागत करती।"

"कुन्द-कली पर लुबधल भौंरा
देखि नयन अछि पड़ल फेर मे,
श्वेत पटल पर कारी डिम्भा
अनमन मधुकर फँसल डोरि मे।" (५१)

"तामुत्तीर्य व्रज परिचितभ्रूलताविभ्रमाणां
पक्ष्मोत्क्षेपादुपरिविलसत्कृष्णशारप्रभाणाम्।
कुन्दक्षेपानुगमधुकरश्रीमुषामात्मबिम्बं
पात्रीकुर्वन्दशपुरवधूनेत्रकौतूहलानाम्॥"



"हे घन, आब जत' तों जयब'
से जनपद अछि ब्रह्मावर्त्तक
एतहि बैसि चतुरानन कैलनि
सृष्टिक काज, सकल आवर्त्तक।"

"सरस्वती आ दृषद्वती दुइ
देवनदी केर बीचक धरती,
कुरुक्षेत्र अछि एतहि जतय
क्षत्रिय लड़लनि संहारक कुस्ती।"

"जहिना तों पंकज पर पानिक
मुसराधार वृष्टि करबइ छ',
तहिना अर्जुन वीरक मुँह पर
तिक्ख वाण मारय रहि-रहि क'।"

(५२)



"ब्रह्मावर्तं जनपदमथच्छायया गाहमानः
क्षेत्रं क्षेत्रप्रधनपिशुनं कौरवं तद्भजेथाः।
राजन्यानां शितशरशतैर्यत्र गाण्डीवधन्वा
धारापातैस्त्वमिव कमलान्यभ्यवर्षन्मुखानि॥"

"महाभारतक युद्ध असल मे
विश्वक पहिला विश्वयुद्ध छल,
सगरो जगत बँटल दू पक्षे
जे अप्पन छल, से विरुद्ध छल।"



"बलरामहि टा एहन छला जे
केकरहु दिश लाठी नहि धैलनि,
कौरव-पाण्डव छला कुटुम्बे
तैं केकरहु नहि पीठी ठोकलनि।"



"मद्य-पान अति प्रिय आदति छल
रेवती संग पिबथि दुहु बेगती,
हुनकहि आँखिक बिम्ब चषक मे
झलकि वारुणी बनय विशेषी।"

"युद्धक क्वाथ तेहन घौंजनि भेल
छोड़ल सभटा सुख परिहासक,
सेवि सरस्वति - जल परित्यागल
राजभोग-सुख-रीति विलासक।"



"ब्रह्मवधक परित्राण करबय
अन्तःशुचि एक्कहि स्नाने,
सरस्वती मे डूब दिहँ' तों
हे घन, यद्यपि रंगक श्यामे।" (५३)



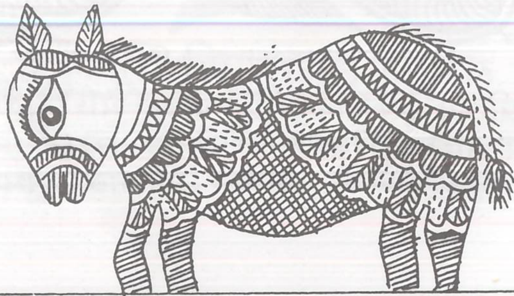
"हित्वा हालामभिमतरसां रेवतीलोचनाङ्कां
बन्धुप्रीत्या समरविमुखो लाङ्गली याः सिषेवे।
कृत्वा तासामभिगममपां सौम्य! सरस्वतीना-
मन्तः शुद्धस्त्वमपि भविता वर्णमात्रेण कृष्णः॥"

"हे घन, भागरथिक खिस्सा त'
यद्यपि तोंहू जानिते होयब'
तइयो शिव - महिमा सुनि पुनि-पुनि
पूत - पवित्र सनाथे होयब'।"

"छला पुरातन सूर्यवंश मे
सगर नाम के एगो नरपति,
तिनकर रानी सुमति बिऔलनि
साठि हजार अजस्र सन्तति।"

"राजा अश्वमेध जग ठानल
इन्द्रक माथा भय सँ ठनकल,
यज्ञक घोड़ा चोरा-नुका कैं
कपिलाश्रम मे जा कै बान्हल।"

"साठि हजार पुत्र सभ ताकय
घोड़ा अतय-ओतय नहि पाबय,
गेल जखन पाताल ओतहि छल
कपिल लीन, मुँह सँ के बाजय?"



"सगरक पूत अताइ अगत्ती
बूझल घोड़ा मुनी चोरौलनि,
उकठ कैल, मुनि ध्यान भंग भेल
ताकि अग्नि-दृग सबहि जरौलनि।"

"कतबा युग बीतल एहि बातक
नहि उपाय भेटल उद्धारक,
के अछि एहन तपस्वी जे जन
गंगा आनि सकत सुर-धामक।"

"हरिक कृपा सँ ओही वंश मे
भक्तराज भागिरथ जनमला,
घोर तपस्या - त्याग प्रतापें
सुरसरि धार भूमि पर लयला।"

"तिनकहि नामे सुर- सरिता कें
भागिरथी सभ लोक कहइ छथि,
दैहिक - दैविक - भौतिक तापक
जे कल्मष भव-व्याधि हरइ छथि।"

"मुदा प्रश्न बड़ जटिल ठाढ़ छल
भू- अवतरण सकारलि गंगा,
वसुधा बजली, "हम नहि धारब,
स्वर्गक चोट बनाओत अपंगा।"

"देखि पृथ्विक आनाकानी
भेला भागिरथजी निरुपाय,
त्राहि-त्राहि कहि धैलनि शिव-पद
हे हर, बाँचल कोन उपाय!"

"आशुतोष भगवान महादेव
लेलनि रूप विराट बनाय,
जटा खोलि दस दिशा खिरैलनि
तइ मे गंगा लेल बझाय।"

"आगाँ-आगाँ छला भागिरथ
हनहनाइत पाछाँ सँ सुरसरि,
गामक गाम मग्न भेल जल सँ
डूबल जह्नु ऋषिक आश्रम धरि।"

"अतिशय कुपित भेला ऋषि जह्नु
सुड़कि गेला सभ टा गंगाजल,
सुरगण जोड़ल हाथ तखन ओ
कर्ण-द्वार सँ धार निकालल।"

"जह्नु ऋषिक बेटी बनि गंगा
आगाँ सम्हरि-सम्हरि क चलली,
सगर-पूत उद्धार कैल पुनि
पुण्यमयी जाह्नवी कहयली।"

"हे घन, कुरुक्षेत्र सँ आगाँ
कनखल एगो मुक्तिधाम अछि,
हिमगिरि सँ नीचाँ समतल पर
गंगा उतरक बाट ओतय अछि।"

"के अछि खल जे मुक्ति ने पाबय
एहि सोपाने स्वर्ग ने पाबय ?
तों सुरसरि गंगा लग जइहऽ
जिनका सेवने सभ सुख पाबय।"



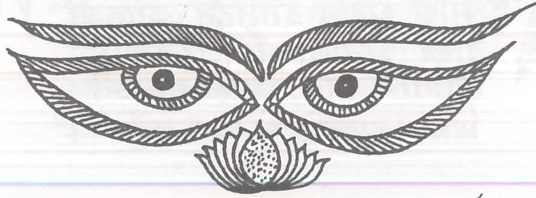
"माथ चढ़ल इतराइत जाह्नवी
देखि भवानी भौं तड़कौती,
सौतिनि डाह, परखि गङ्गाजी
शिव-चुड़की धै फेन बहौती।" (५४)

"तस्माद् गच्छेरनुकनखलं शैलराजावतीर्णां
जह्नोः कन्यां सगरतनयस्वर्गसोपानपङ्क्तिम् ।
गौरीवक्त्रभ्रुकुटिरचनां या विहस्येव फेनैः
शंभोः केशग्रहणमकरोदिन्दुलग्नोर्मिहस्ता ॥"

"हे प्रिय घन, ओहि ठाँ कनखल मे
हिमगिरि सँ नीचाँ उतार अछि,
तें नीचाँ सँ ऊपर जयबह
भीजल पंथ उभर-खाभर अछि।"

" गंगा-जल कें पान करक हित
देह तोरा किछु मोड़य पड़त',
ऐरावत सन मुँह नीचाँ कै
डाँड़ उठल ऊपर दिश रहत'।"

"स्हन दशा मे जल पिबैत क्षण
बिम्ब तोहर गंगा मे पसरत,
लोक बुझत संगम-प्रयाग सन
यमुना आबि गंग मे उमरल।" (५५)



"तस्याः पातुं सुरगज इव व्योम्नि पश्चार्धलम्बी
त्वं चेदच्छस्फटिकविशदं तर्कयेस्तिर्यगम्भः।
संसर्पन्त्या सपदि भवतः स्रोतसि च्छायया ऽसौ
स्यादस्थानोपगतयमुनासङ्गमेवाभिरामा ॥"

"हे मीता, दूरहि सँ देखब;
हिममण्डित गिरि-शिखर ठाढ़ अछि,
शुभ्र तुषारक भीजल मारुत
क्षण-क्षण तन कें कँपा रहल अछि।"

"शैल-शैल पर कस्तूरी-मृग
सगरो मह-मह गन्ध बसल अछि,
क्षण मे हरत हरारति तोहर
एहि ठाँ सभ किछु दिव्य स्थल अछि।"

"हिम-आच्छादित शैल-शिखर पर
शिवक बड़द किचकाँड़ि करइ अछि,
कारी मे उज्जर सानल सन
देखब' अपनहुँ, रंग लगइ अछि।" (५६)



"आसीनानां सुरभितशिलं नाभिगन्धैर्मृगाणां
तस्या एव प्रभवमचलं प्राप्य गौरं तुषारैः।
वक्ष्यस्यध्वश्रमविनयने तस्य शृङ्गे निषण्णः
शोभां शुभ्रत्रिनयवृषोत्खातपङ्कोपमेयाम् ॥"

"हे प्रिय, हिम-पर्वत पर कौखन
वात-बिहारिक जोर रहइ अछि,
गाछुक डाढ़ि डाढ़ि सँ रगड़्य
घर्षण सँ अंगड़ाहि लगइ अछि।"

"तुंग हिमालय निविड़ विपिन मे
अगड़ाही सँ गाछ जरइ अछि,
भयाक्रान्त भागय आगिए दिश
चमरी गाइक पोंघ जरइ अछि।"

"हे वारिद, तों भल समर्थ छ'
आपदग्रस्तक मददि पुरबिह',
जँ दावानल करय उछन्नर
मुसराधार पानि बरसाबिह'।" (५७)

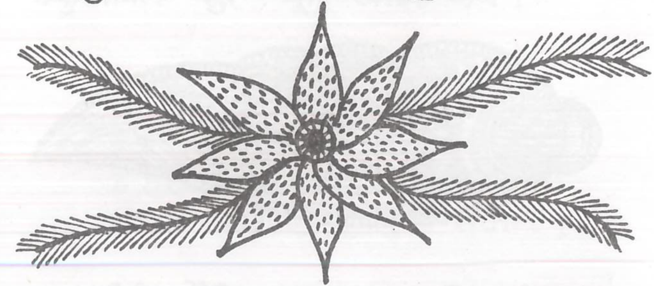


"तं चद्वायौ सरति सरलस्कन्धसङ्घट्टजन्मा
बाधेतोल्काक्षपितचमरीवालभारो दवाग्निः।
अर्हस्येनं शमयितुमलं वारिधारासहस्रै-
रापन्नार्त्तिप्रशमनफलाः सम्पदा ह्युत्तमानाम् ॥"

"हे घन, ओतय हिमालय-स्थित
वन मे शरभ मृगा किछु भेटत',
ओ एकारि अछि, तैं उफाँटि अछि
जखने देखत', कूदि झपटत'।"

"आठ पहर अछि ओकरा तन पर
चारि निचलका, चारि उपरका,
ओ नहि जानय अतिथि-समागम
बड़ मरखाह जीव अछि ओतुका।"

"जौं तोरा पर कूदय चाहय
पहिने तों किछु खेल करबिह',
खतरा देखि उछलि कै नभ मे
बाकुट मे भरि बर्फ खसबिह'।" (५८)

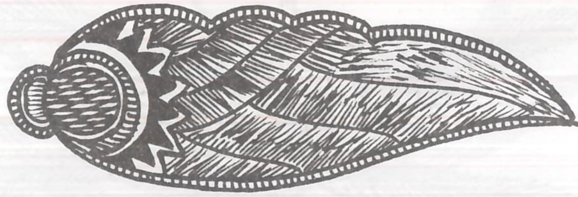


"ये संरम्भोत्पतनरभसाः स्वाङ्गभङ्गाय तस्मिन्
मुक्ताध्वानं सपदि शरभा लङ्घयेयुर्भवन्तम्।
तान्कुर्वीथास्तुमुलकरकवृष्टिपातावकीर्णान्
के वा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः॥"

"हे प्रिय मेघ, हिमालय मे तों
घुमिते - फिरिते ताकि सकइ छ',
कोनो शिला पर शिव-पद-चिन्हक
दर्शन-लाभ सुतारि सकइ छ'।"

"सिद्ध-योगिजन श्रद्धापूर्वक
पूजथि चरण त्यागि कल्मष-मद,
होथि सनाथ अनघ परिव्राजक
जीवोत्तर निर्वाण प्रमथ-पद।"

"जौं तों हर-पद-दर्शन पाबिह'
सविधि पूजि परिकरमा करिह',
बम-बम-बम भूः गाल बजा कैं
सीस झुका चरणामृत पाबिह'।" (५८)



"तत्र व्यक्तं दृषदि चरणन्यासमर्धेन्दुमौलेः
शश्वत्सिद्धैरुपचितबलिं भक्तिनम्रः परीयाः।
यस्मिन्दृष्टे करणविगमादूर्ध्वमुद्धूतपापाः
संकल्पन्ते स्थिरगणपदप्राप्तये श्रद्दधानाः॥"

"मय दानव छल कला-शिरोमणि
श्रेष्ठ वास्तुविद कुशल घरामी,
सोना, चानी आओर लोह सँ
रचल 'त्रिपुर' नगरी बड़ नामी।"

"तीन भुवन मे पसरल गिरि सन
छल अभेद्य दुर्जय सभ नगरी,
दानव बनल अजेय त्रिपुर मे
करय अनेरो मारा-मारी।"

"सुर-नर-मुनि कें मारि असुर सभ
ओही नगर मे पइस जाइत छल,
बंद कपाट खुलै नहि केहुना
ठकुआयल सुर घूरि जाइत छल।"

"अत्याचार जखन अति बाढ़ल
देव लोकनि कैलनि शिव-वंदन,
हे हर, असुरक अनाचार गढ़
त्रिपुर ध्वंश हो, हे दुःख-भंजन।"

"सुनैत-सुनैत भोला रिसिऐला
सिहरि उठल सृष्टिक सभ गत्र,
बरद-पीठ असवार चलल शिव
लै अमोघ निज पशुपत-अस्त्र।"

" आगाँ - आगाँ मृत्यु चलइ छल
पाछाँ विकट भूत दुर्दान्त,
मारल शर शिव तानि त्रिपुर पर
भष्म भेल पुर, अग - जग शान्त ।"

" हे घन, त्रिपुर - विजय - उत्सव मे
देखब' किन्नर गान - मगन अछि,
छिद्रित बाँस वायु - झोंका पर
छोड़ि रहल श्रुति - मादक धुन अछि ।"

" तोहर उपस्थिति सँ ओ मण्डलि
आओर होयत गुलजार घनेरो,
तकित - तकित दम, तकित - तकित द्रुम
बोल पखाओज पसरत सगरो ।" (६०)



" शब्दायन्ते मधुरमनिलैः कीचकाः पूर्यमाणाः
संसक्ताभिस्त्रिपुरविजयो गीयते किन्नरीभिः ।
निर्ह्रादस्ते मुरज इव चेत्कन्दरेषु ध्वनिः स्यात्
सङ्गीतार्थो ननु पशुपतेस्तत्र भावी समग्रः ।"

" परशुराम सन वीर - शिरोमणि
पुरुषोत्तम विष्णुक अवतार,
तइयो मन मे उठैत रहइ छल
ईर्ष्या क्रोधक लहरि अपार ।"

" कार्त्तिकेय बल - चर्चा सुनि - सुनि
छला परशुधर बड़ रिसिआयल,
तामस मे पर्वत खोधिऔलनि
खोधिते - खोधिते बिआरि बनायल ।"

" बिआरि देखि सभ लोक अचम्भित
सुर - नर - मुनि सभ कैल छगुन्ता,
दिग्दिगन्त मे बल - यश पसरल
जय भृगुनाथ, हरहु दुःख सन्ता ।"

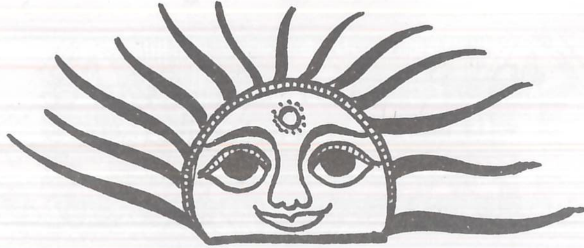
" बिआरि - युक्त पर्वत - विशेष कें
नामकरण भेल 'क्रौञ्च' पहाड़,
परशुराम - कीर्त्तिक प्रतीक ओ
वैह कहाबय 'हंसक द्वार' ।"

" दैत्यराज बलि छला सुकर्मी
दानी परम, अतुल पुरुषार्थी,
स्वर्गक राज छीनि शचि - पति सँ
कैल कतेको जग परमार्थी ।"

नीक ने लागनि सुर-समाज कें
कोनो असुर पाबय स्वर्गासन,
कैल विष्णु छल वामन बनि कै
माङ्गल भू 'त्रय डेग-परिमाण'।"

"हे घन, हंस क्रौञ्च-बीअरि द'
वर्षा-ऋतु मे मानस जाय,
ओही बिअरि द' विष्णु निकलि क'
वचन-बंध बान्हल बलि-काय।"

"कृष्ण-वर्ण वामन एहि बिल सँ
निकलि कैल डेगक विस्तार,
तहिना तोहूँ एही विवर सँ
उत्तर दिशि जइह' ओहि पार।" (६१)



"प्रालेयाद्रेरुपतटमतिक्रम्य तांस्तान्विशेषान्
हंसद्वारं भृगुपतियशोवर्त्म यत्क्रौञ्चरन्ध्रम्।
तेनोदीचीं दिशमनुसरेस्तिर्यगायामशोभी
श्यामः पादो बलिनियमनाभ्युद्यतस्येव विष्णोः॥

"हे घन, बल सौं आन्हर रावण
मन में कैलक अकट विचार,
को'नहुँ विधि लंका ल' आनीं
गिरि कैलास, निधिक भंडार।"

"बान्हि भुजा मे देवगिरी कें
लागल जोर-जोर झकझोरय,
डोलल गिरि, गाछहु ओंघरायल
सिद्ध-मुनी सभ लागल डोलय।"

"नंढ-भण्ड भ' गेल शिवालय
तलमलाय गौरी भू खसली,
थामि शिवक पद ठाढ़ भेली आ'
अजगुत देखि समाख डेरयली।"

"जानि गेला हर बैसल-बैसल
केक्कर अछि ई सब करतूत,
अंगूठा सँ दाबल पर्वत
रावण दबि क' भेल बेथूथ।"

"छटपटाय रावण मेमिआयल
साम-सहस्रक कैलक गान,
क्षमा कैल भगवान सदाशिव
बँचल मोचण्डक जान-परान।"

" हे घन, पर्वत पर गोलाइ मे
रावण 'बाँहिक चेन्ह पड़ल अछि,
क्रौञ्च - विवर सौं निकलि ऊँच भै
जइह' जेम्हर बर्फ भरल अछि ।"

" बालि - कुमारि - युवति सुर-वनिता
हिम - दर्पण मे देखथि सुषमा,
धवल कुमुद सन उज्जवल निर्मल
शिवक हास्य सन जिनकर उपमा ।"

" ताहि हिमाच्छादित पर्वत कें
तों पाहुन बनि रहिह' सुख सौं,
जिनकर चोटी गगन-भूत अछि
जगत-प्रशंसित शिव-महिमा सौं ।" (६२)



" गत्वा चोर्ध्वं दशमुखभुजोच्छ्वासितप्रस्थसन्धेः
कैलासस्य त्रिदशवनितादर्पणस्यातिथिः स्याः ।
शृङ्गोच्छ्रायैः कुमुदविशदैर्यो वितत्य स्थितः खं
राशीभूतः प्रतिदिनमिव त्र्यम्बकस्याट्टहासः ॥"

" हे घन, पीसल चिक्कन काजर
गाढ़ कालिमा ढौरल जैसन,
वर्ण तोहर चमकइ अछि तेहनें
राति अन्हरिया गुज - गुज ऐसन ।"



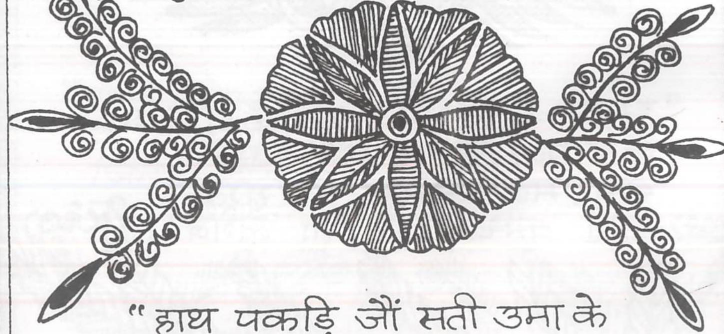
" धवल कान्ति गज-दन्तक द्युति सन
कैलासक तट जखन उतरब',
बलरामक कनहा पर राखल
कारी कम्बल सन तों लगब' ।" (६३)



" उत्पश्यामि त्वयि तटगते स्निग्धभिन्नाञ्जनाभे
सद्यः कृत्तद्विरददशनच्छेदगौरस्य तस्य ।
शोभामद्रेः स्तिमितनयनप्रेक्षणीयां भवित्री
मंसन्यस्ते सति हलभृतो मेचकेवाससीव ॥"

"प्रकृति-नियन्ता शिव-क्रीडा हित
गिरि कैलास - सुमेरु बनौलनि,
हुनकहि रुचि सँ भरल, अलंकृत
मन्दर, गन्धमदन गिरि रचलनि।"

"शिवक देह पर आभूषण बनि
साँप लोटाइत रहइ अछि,
मुदा उमा संग भ्रमण-काल मे
भुजग ने संग रहइ अछि।" (६४)



"हाथ पकड़ि जौं सती उमा के
शिव कें टहलैत देखिह',
हे घन, मणि तट पर चढ़बा' ले'
तों तुरन्त सीढ़ी बनि जइह'।" (६४)

"हित्वा तस्मिन्भुजगवलयं शम्भुना दत्तहस्ता
क्रीडाशैले यदि च विचरेत्पादचारेण गौरी।
भङ्गीभक्त्या विरचितवपुः स्तम्भितान्तर्जलौघः
सोपानत्वं कुरु मणितटारोहणायाग्रयायी॥"

"हे मित, ओइ कैलास पुरी मे
सुर-कन्या सभ केलि करइ छथि,
सभ खेलौड़ि, उन्मुक्त, हास्यमय
जलदह मे चुभकैत रहइ छथि।"

"मारि-मारि जल पर कंगन सौं
जलक फुचुक्का झड़ी छोड़इ छथि,
मुँह मे जल भरि, गाल दाबि क'
इन्द्रधनुष-कल्लोल करइ छथि।"

"हे घन, ऐसन उषम मास मे
किछु क्षण हुनको मोन लगबिह',
देखिह', जँ नहि मुक्ति भेटय त'
ठनका खूब गहन तड़काबिह'।" (६५)



"तत्रावश्यं वलयकुलिशोद्घट्टनोद्गीर्णतोयं
नेष्यन्ति त्वां सुरयुवतयो यन्त्रधारागृहत्वम्।
ताभ्यो मोक्षस्तव यदि सखे! घर्मलब्धस्य न स्यात्
क्रीडालोलाः श्रवणपरुषैर्गर्जितैर्भाययेस्ताः॥"

"हे प्रिय, जहिना कमल-सूर्य मे,
जहिना जलनिधि आओर चन्द्र मे,
तहिना अग्नि-पवन दूनू मे
सहज मित्रता मेघ - मोर मे।"



" पर्वत तोहर जेहन मित्र छ'
तइ मे रोच कतहु नहि रखिह',
मित्रक वैभव अपनाहि बुझि क'
जे-जे मन हो, से-से करिह'।"

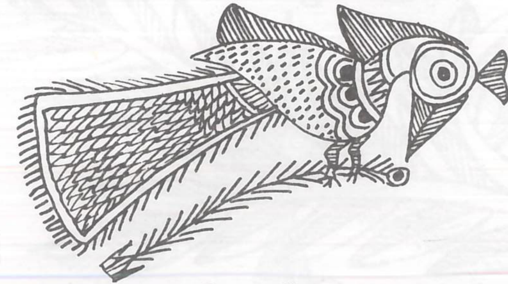


" इरावान जलवान समुद्रक
मन्थन सँ निकलल ऐरावत,
इन्द्र लेलनि ओ उज्जर हाथी
घुमैत कतहु सौं देखिह' आओत।"

" स्वर्ण-कमल जनमाबयवाला
मानसरोवर जल अति निर्मल,
पीबि छाँक भरि धन्य होअ' प्रिय
ई सम सुख अछि प्रारब्धक फल।"



" ऐरावत आओत जल पीबय
तेकरा संग प्रणय-रत होइह',
पारिजात नव-पल्लव मुँह पर
राखि घोघ सन कौतुक करिह'।" (६६)



"हेमाम्भोजप्रसवि सलिलं मानस्यादादानः
कुर्वन्कामं क्षणमुखपटप्रीतिमैरावतस्य ।
धुन्वन्कल्पद्रुमकिसलयान्यंशुकानीव वातै-
र्नानाचेष्टैर्जलद, ललितैर्निर्विशेस्तं नगेन्द्रम् ॥"

"हे इच्छापथगामी प्रियवर
जेना पहुक कोरा मे ओलड़ल,
सुन्दरि कोनो, तहिना अलका
कैलासक जंघा पर सूतल।"

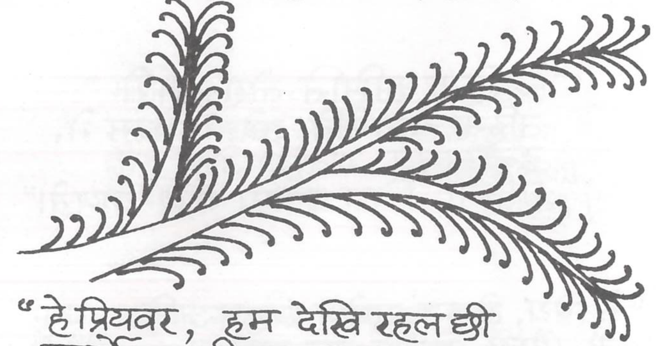


"आओर चिन्हाइन कते हम कहिय'
कात-करोट बहइ छथि गंगा,
जेना रेसमी वस्त्र पहिरने
एकछाहा उज्जर एकरंगा।"

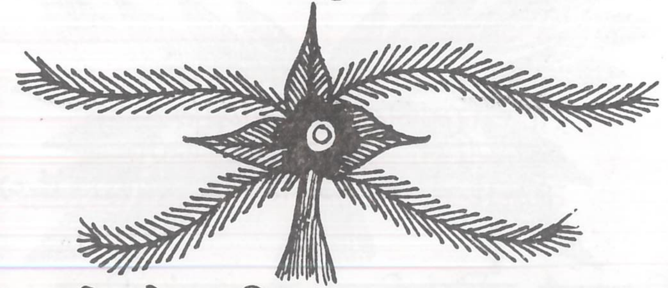


"ओहि ठाँ गगनचुम्बि सतमहला
अद्भुत धौल विमान विलक्षण,
ऊँचे शिखर बुझि बादर बैसय
पवन अनेरो फुदकय अनुखन।"

"जेना सुकामिनि केसक लट मे
मोतिक हार सुरुचि सजबइ छथि,
तहिना बरखा-बुन्द सौख सँ
उच्च भवन आँजुर मे लइ छथि।"



"हे प्रियवर, हम देखि रहल छी
स्वर्गोपम प्रिय अलका गाम,
सभ टा ओहिना ठीक-ठाक अछि
जेना छोड़ि अयलहुँ एहि ठाम।" (६७)



"तस्योत्सङ्गे प्रणयिन इव स्रस्तगङ्गादुकूलां
न त्वं दृष्ट्वा न पुनरलकां ज्ञास्यसे कामचारिन्।
या वः काले वहति सलिलोद्गारमुच्चैर्विमाना
मुक्ताजालग्रथितमलकं कामिनीवाभ्रवृन्दम्॥"

"हे प्रियघन, जहिना तों अनुपम
तेहने तुल्य पुरी अछि अलका,
भरल-पुरल सभ भवन घनेरो
भोगभूमि जग कहइछ जेकरा।"

"जहिना दामिनि तोरा संग मे
तहिना कामनि ओतय भवन मे,
इन्द्रधनुष सतरंगा तोहर
तहिना चित्र ओतय कण-कण मे।"

"हे प्रिय, केहन सुयोग सहज अछि
तों पौलह गर्जन-रव जहिना,
तृक्-धुम् तत-धुम् बजै पखाओज
गीत-नाद ओहि ठाँ अछि तहिना।"

"सीख-लीख सादृश्य तोरे सन
तों धारय जल, ओ मणिमय अछि,
जहिना तों उन्नत नभचारी
तहिना ओ उत्तुंग निलय अछि।" (६८)

"विद्युत्वन्तं ललितवनिताः सेन्द्रचापं सचित्राः
संगीताय प्रहतमुरजाः स्निग्धगम्भीरघोषम्।
अन्तस्तोयं मणिमयभुवस्तुङ्गमभ्रंलिहाग्रा
प्रासादास्त्वां तुलयितुमलं यत्र तैस्तैर्विशेषैः॥"

"हे मीता, तोहरो छ' बूझल
नित्य विराजय षट्ऋतु ओहि ठाँ,
मह-मह फूल करय सभ मासक
अलि-गुंजन-मुखरित नभ जइ ठाँ।"

"भाँति-भाँति के फूल सजाबथि
सुन्दरि सभ नख-सिख के रचना,
कर मे कमल अलक मे बेली
कर्णफूल शिरिषक गहना।"

"पुष्प-पराग मलथि आनन पर
सिउँथि कदम्बक पुष्प अनूप,
लहलह यौवन सुषमा-सेवित
रसमय जीवन, दिव्य स्वरूप।" (६९)



"हस्ते लीलाकमलमलके बालकुन्दानुविद्धं
नीता लोध्रप्रसवरजसा पाण्डुतामानने श्रीः।
चूडापाशे नवकुरबकं चारु कर्णे शिरीषं
सीमन्ते च त्वदुपगमजं यत्र नीपं वधूनाम्॥"

"ओहि अलका मे गाछ-बिरिछ सभ
नित्य फुलाय-फरइ अछि,
टुस्सा-टुस्सा लुबधल मज्जर
भ्रमर बताह बनल अछि।"

"निर्मल जलसँ भरल सरोवर
नित्यपद्म विकसित अछि,
हंस-समूह नलिनि कें घेरने
जल मे केलि करइ अछि।"

"नित्य इजोरिया राति चकाचक
दुर्लभ दृश्य रहइ अछि,
पौसुआ शिखी उठा कै घेंटी
केका-नाद करइ अछि।" (८०)



"यत्रोन्मत्तभ्रमरमुखराः पादपा नित्यपुष्पा
हंसश्रेणीरचितरशना नित्यपद्मा नलिन्यः।
केकोत्कण्ठा भवनशिखिनो नित्यभास्वत्कलापा
नित्यज्योत्सनाः प्रतिहततमोवृत्तिरम्याः प्रदोषाः॥"

"हे प्रिय घन, एहि ठाँ अलकामे
भाव ताप अछि दोसर,
मर्त्यलोक मे जे अछि दुःखकर
से एहि ठाँ सुख-गोचर।"

"एहि ठाँ दुःख मे क्यो नहि कानय
सुख मे नोर खसइ अछि,
प्रेम-भोग सँ जे अछि बाहर
से सन्ताप भोगइ अछि।"

"अलकावासी वृद्ध ने होअय
नित भोगय चिर यौवन,
आधि मात्र उन्माद, तपन आ'
शोषण, थंबन, मोहन।" (८१)



"आनन्दोत्थं नयनसलिलं यत्र नान्यैर्निमित्तै-
र्नान्यस्तापः कुसुमशरजादिष्टसंयोगसाध्यात्।
नाप्यन्यस्मात्प्रणकलहाद्विप्रयोगोपपत्ति-
र्वित्तेशानां न च खलु वयो यौवनादन्यदस्ति॥"

"स्फटिकक सम महल - अटारी
सीढ़ी पीढ़ी ओलती,
पसरल दुधिया राति इजोरिया
जेना क्षीर मे मोती।"

"तइ पर तनल ओहार क्षितिज धरि
तारावलि के फुदना,
ठाम - ठीम यक्षिणि आ यक्षक
सहज सुरति रसपूर्ण।"

"पुष्कर वाद्य मधुर धुन बाजय
पंचवाण हित साधय,
रति मे रस, रसमय सुख-जीवन
कल्पवृक्ष झहराबय।" (८२)



"यस्यां यक्षाः सितमणिमयानेत्य हर्म्यस्थलानि
ज्योतिश्छायाकुसुमरचितान्युत्तमस्त्रीसहायाः।
आसेवन्ते मधु रतिफलं कल्पवृक्षप्रसूतं
त्वद्गम्भीरध्वनिषु शनकैः पुष्करेष्वाहतेषु॥"

"मिथिला मे गामक बच्चा सभ
धूरि मे 'चनमा' खेलय,
चुटकी मे भुटकी - काठी लै
होसिआरी सँ नुकबय।"

"अलका मे सुन्दरि सभ खेलय
बाकुट मे मणि लै - लै,
स्वर्ण - बालु मन्दारक छाया
सुरगण देखय मगन भै।"

"नभगंगा शीतल समीर सौं
सेवित यक्ष - कुमारी,
करय देवगण नित्य खुसामद
कामातुर करजोड़ी।" (८३)



"मन्दाकिन्याः सलिलशिशिरैः सेव्यमाना मरुद्भि-
र्मन्दाराणामनुतटरुहां छायया वारितोष्णाः।
अन्वेष्टव्यैः कनकसिकतामुष्टिनिक्षेपगूढैः
संक्रीडन्ते मणिभिरमरप्रार्थिता यत्र कन्याः॥"

"हे घन, ओहि अलका मे कामक
कौतुक अकथ अगम अछि,
सुख - सौन्दर्यक भोग एकटा
जीवक धर्म परम अछि।"

"केलि- भवन मे आतुर प्रेमी
क्षण - क्षण उन्मन अनुनय,
पएर दाबि पइसय रसवंती
मन अधीर, तन सकुचय।"

जेना बाज झपटय पंछी पर
झपटि धरय पहु कोंचा,
फूजय नीविक बंध फटाफट
नग्न भेली परिणीता।"

"चौमुख दीप जरय मणि-माणिक
रोम - रोम झलकाबय,
लाजें भेल कठौत सुन्दरी
दीप मिझा नहि पाबय।"(७४)

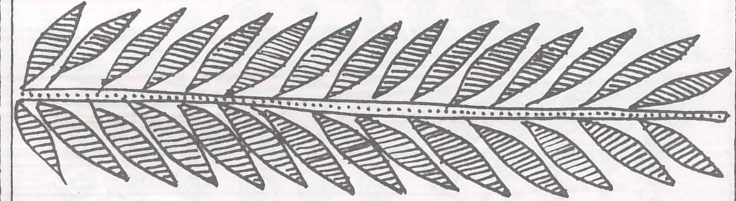
"नीवीबन्धोच्छ्वसितशिथिलं यत्र बिम्बाधराणां
क्षौमं रागादनिभृतकरेष्वाक्षिपत्सु प्रियेषु।
अर्चिस्तुङ्गानभिमुखमपि प्राप्य रत्नप्रदीपान्
ह्रीमूढानां भवति विफलप्रेरणा चूर्णमुष्टिः॥"



"अलका मे सभ भवन-अटारी
दुरखा - घुरखुर पाया,
सभ तरि लिखिया भीत-भीत पर
रंगक पसरल माया।"

"ठाम-ठीम पर कोबर-ककबा
बेंरे - बाँस -कमलदह,
नयना - योगिनि धोधे तर में
रचबाधि रास अतह।"

"छोट - छोट बादर के टुकड़ी
वातायन सौं पइसय,
लुच्चा जेकाँ चुमय लिखिया कें
चित्रक देह भिजाबय।" (७५)



"नेत्रा नीताः, सततगतिना यद्विमानाग्रभूमी-
रालेख्यानां स्वजलकणिकादोषमुत्पाद्य सद्यः।
शङ्कास्पृष्टा इव जलमुचस्त्वादृशा जालमार्गै-
र्धूमोद्गारानुकृतिनिपुणा जर्जरा निष्पतन्ति।"

"अलका मे, हे घन, निशीथ मे
बरसै अमिय अयाचित,
शुभ्र ज्योत्स्ना पसरल अग-जग
गगन निरभ्र अबाधित।"

"हरित भूमि पर ओसक बुनकी
टाँकल जेना मनोरी,
तइ पर सित पर्यङ्क समारल
रति - रण - क्लान्त किशोरी।"

"परिरम्भन-मर्दन सँ आकुल
कामिनि रस - उपचारय,
बनल दिगम्बर, उनटि-पलटि कैं
रोम - रोम सरसाबय!" (७६)



"यत्र स्त्रीणां प्रियतमभुजालिङ्गनोच्छ्वासितानां-
मङ्गग्लानिं सुरतजनितां तन्तुजालावलम्बाः।
त्वत्संरोधापगमविशदैश्चन्द्रपादैर्निशीथे
व्यालुम्पन्ति स्फुट जललवस्यान्दनश्चन्द्रकान्ताः॥"



"अक्षय निधि सँ भरल गेह सभ
सौख्य - विलासक साधन,
सुर-वनिता सभ आबथि नित्तहु
अलका चढ़ि निज वाहन।"

"पुष्प-यान पर बैसि सुकेसी,
शीला, रम्भा, मणिका,
परी मेनका मंदिर मृणाली
ऊर्वसी सुर-गणिका।"

"यक्षपतिक वैभ्राज वाटिका
नित्य राति मे मेला,
यक्ष-यक्षिणी, देवसुन्दरी
किन्नर लगबय डेरा।" (७७)

"अक्षय्यान्तर्भवननिधयः प्रत्यहं रक्तकण्ठै-
रुद्गायद्भिर्धनपतियशः किन्नरैर्यत्र सार्धम्।
वैभ्राजाख्यं विबुधवनितावारमुख्यासहाया
बद्धालापा बहिरुपवनं कामिनो निर्विशन्ति॥"

"अभिसारक बड़ चलनसरि अछि
हे घन, एहि अलका मे,
नित साँझहि चाटी-पाटी कै
कामिनि करय प्रयाणे।"

"रंग-रभस मे लथपथ नागरि
बेसुध आलिंगन मे,
सोह रहै नहि कखन निशाकर
डुबला अस्ताचल मे।"

"हड़बड़ मे सुधि रहै न कनिञो
पुष्पहीन कच-कुन्तल,
मोतिक माल वक्ष पर टूटल
एकहि कान मे कुण्डल।" (६८)



"गत्युत्कम्पादलकपतितैर्यत्र मन्दारपुष्पैः,
पत्रच्छेदैः, कनककमलैः कर्णविभ्रंशिभिश्च।
मुक्ताजालैः, स्तनपरिसरच्छिन्नसूत्रैश्च हारै-
र्नैशो मार्गः सवितुरुदये सूच्यते कामिनीनाम्॥"

"अलका मे नित समयवसन्तक
प्रचुर पुष्प मकरन्दक,
शृङ्गारक नहि ओर-छोर अछि
काम-कला आनन्दक।"

"तञ्यो जानि छशुन्ता लगत'
हे घन, बात तेहन अछि,
कामदेव नहि वाण देखाबथि
एहि ठाँ, एहन चलन अछि।"

"यक्षपतिक संगी शिव शंकर
एहि ठाँ बास करइ छथि,
हुनकहि डर सँ पंचवाण नहि
पंचक वाण तनइ छथि।"

"अलका मे मन्मथक काज ई
वनिता चतुर करइ छथि,
भौंह तानि नयनक कटाक्ष सौं
रसिकक ज्ञान हरइ छथि।" (६९)

"मत्वा देवं धनपतिसखं यत्र साक्षाद्वसन्तं
प्रायश्चापं न वहति भयान्मन्मथः षट्पदज्यम्।
सभ्रूभङ्गप्रहितनयनैः कामिलक्ष्येष्वमोघै-
स्तस्यारम्भश्चतुरवनिताविभ्रमैरेव सिद्धः॥"

"अलंकार-ज्ञानी बतबइ छथि
सज्जा चारि प्रकारक,
पहिरयवाला, लेपयवाला,
धारणीय, कच-धारक।"

"एहि अलका मे नाना वर्णक
वस्त्र पहिरना भेटय,
नयन-विलासक गीत सुनाबैत
मदिरा एहि ठाँ भेटय।"

"वेणी-वक्षक सज्जा किसलय
नाना पुष्प भेटइ अछि,
रमणिक चरण-कमल मे अर्पित
आलक रंग भेटइ अछि।"

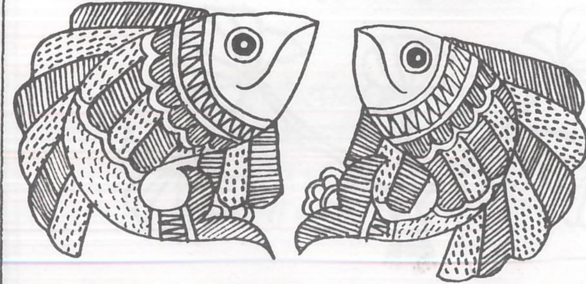
"जीवन-यौवन आयुक दाता
कल्पवृक्ष अछि एहि ठाँ,
तही वृक्ष सौं सभ किछु भेटय
पूर्ण भोग अछि एहि ठाँ।" (८०)

"वासश्चित्रं मधु नयनयोर्विभ्रमादेशदक्षं
पुष्पोद्भेदं सह किसलयैर्भूषणानां विकल्पान्।
लाक्षारागं चरणकमलन्यासयोग्यं च यस्या-
मेकः सूते सकलमबलामण्डनं कल्पवृक्षः॥"

"हे प्रिय, जतबा बात बतौलिय'
से तों शीघ्रहि देखब',
अपनहि देखि-परखि क' बेसी
भोगभूमि कें बुझब'।"

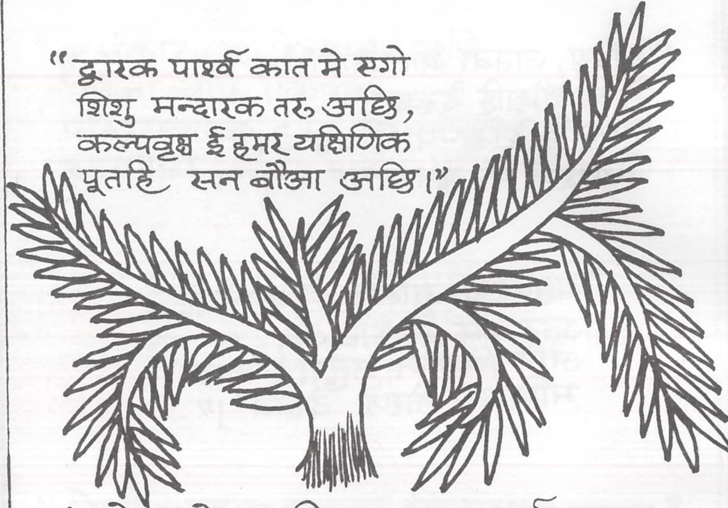
"यक्षपतिक प्रासाद सँ कनिञे
उत्तर भर मे हँटि क',
अति विशाल उत्तुंग एकटा
मणिमय तोरण देखब'।"

"इन्द्रधनुष-मणि आलोकित ई
द्वार तते उँचगर अछि,
योजन भरि दूरे सँ देखब'
शिल्प केहन कटगर अछि।"

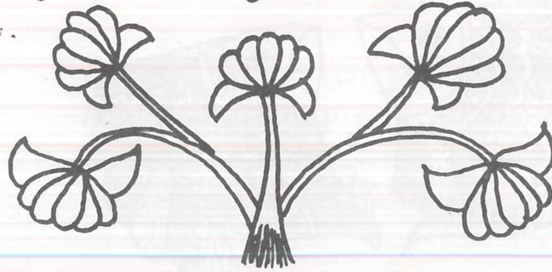


"बेहु हमर पुस्तैनी घर अछि
पुरखा सभहक अरजल,
गगनचुम्बि यश-कीर्त्तिक चर्चा
सुरपुर-भू धरि पसरल।"

"द्वारक पार्श्व कात मे एगो
शिशु मन्दारक तरु अछि,
कल्पवृक्ष ई हमर यक्षिणिक
पूतहि सन बौआ अछि।"



"ततेक छोट अछि गाछ एखन ई
हाथे सौं पाबइ छथि,
जखन दुलार कोखि मे उमरनि
पुष्पित डाढ़ि चुमइ छथि।" (८१)



"तत्रागारं धनपतिगृहादुत्तरेणास्मदीयं
दूराल्लक्ष्यं सुरपतिधनुश्चारुणा तोरणेन।
यस्योपान्ते कृतकतनयः कान्तया वर्धितो मे
हस्तप्राप्यस्तवकनमितो बालमन्दारवृक्षः ॥"

"हे घन, हमर भवन मे सीढ़ी
मरकत मणिक बनल अछि,
परिसर मे भीतर गेला पर
पोखरि एक खुनल अछि।"

"पोखरि के सीढ़ी मणि-मेढ़ल
स्वर्णक कमलबनल अछि,
नाल तेकर वैदूर्य मणिक अछि
हंसक बास बनल अछि।"

"वर्षा-ऋतु मे अन्य सरोवर
जल मटिआह रहइ अछि,
एही कारणे हंस तोरा संग
मानस-सर भागइ अछि।"

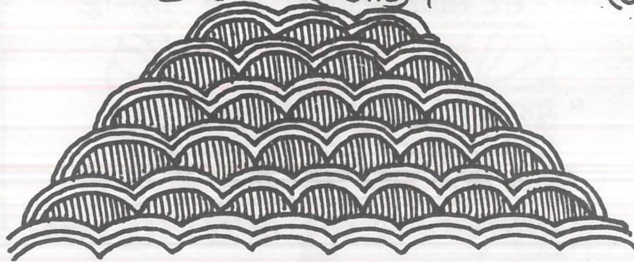
"मुदा एत' अलका मे पोखरि
निर्मल सतत रहइ अछि,
तोरा देखि क' तैं नहि हंसइ
कनिञो व्यग्र रहइ अछि।" (८२)

"वापी चास्मिन्मरकतशिलाबद्धसोपानमार्गा
हैमैश्छन्ना विकचकमलैः स्निग्धवैदूर्यनालैः।
यस्यास्तोय कृतवसतयो मानसं सन्निकृष्टं
नाध्यास्यन्ति व्यपगतशुचस्त्वामपि प्रेक्ष्य हंसा।"

"ओहि पोखरि के तट पर एगो
शिखर-युक्त पर्वत अछि,
इन्द्रनीलमणि-पर्वत तइ पर
स्वर्ण-कदै झलकइ अछि।"

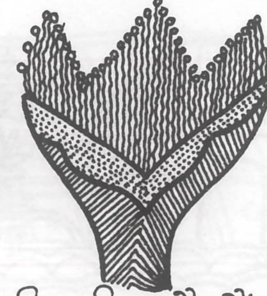
"जेहने तोहर वर्ण नील सन
तेहने शैल 'ओत' अछि,
जहिना तोहर दामिनि दमकय
तेहने 'ओत' कदै अछि।"

"हमर केलि-स्थल ई पर्वत
दर्शनीय अनुपम अछि,
तोहर भाउज कें बड़ मन भावैन
तें नहि ई बिसरइ अछि।" (८३)



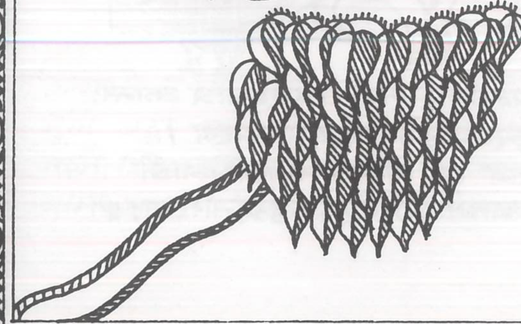
"तस्यास्तीरे रचितशिखरः पेशलैरिन्द्रनीलैः
क्रीडाशैलः कनककदलीवेष्टनप्रेक्षणीयः।
मद्गेहिन्याः इति सखे! चेतसा कातरेण
प्रेक्ष्योपान्तस्फुरिततडितं त्वां तमेव स्मरामि॥"

"हे प्रिय, गाछक टोना अछि किछु
परम्परा सँ आयल,
युवा वृक्ष जौं फुल दियै नहि
बुझू ऐब अछि लागल।"



"सुन्दरि नारि छुबै जौं चम्पा
कनैलक आगाँ नाचय,
भालसरी पर कुड़रा फेकय
अशोकक जड़ि लतिआबय;"

"कहल गेल अछि, डहकन सुनि क'
मन्दारहु खिल पाबय,
मुँहक भाफ सौं आमक पल्लव
शीघ्रहि मज्जर पाबय।"



"हे घन, ओहि पर्वत पर एगो
कोबर-कक्ष बनल अछि,
दुनू कात मे गाछ, अशोकक
भालसरी लागल अछि।"

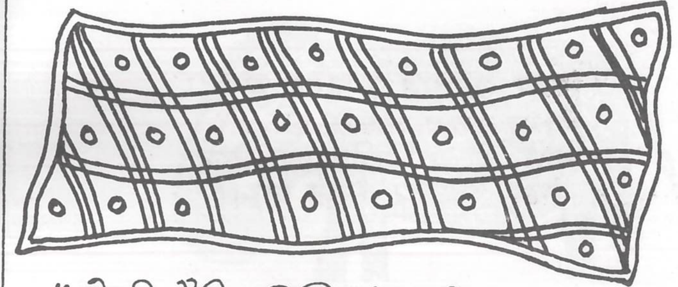


"विरह-काल बुझि गाछहु प्रायः
नहिंत्ते फरइ-फुलइ अछि,
आबि स्वामिनी उपचारथु तन
तेकरहि बाट तकइ अछि।" (८४)



"रक्ताशोकश्चलकिसलयः केसरश्चात्र कान्तः
प्रत्यासन्नौ कुरवकवृतेर्माधवीमण्डपस्य।
एकः सख्यास्तव सह मयावामपादाभिलाषी
काङ्क्षत्यन्यो वदनमदिरां दोहदच्छद्मनाऽस्याः॥"

"हे मित, लाल अशोक-मौलिश्री
ताहि बीच छवि पाबय,
हरिअर कोमल बाँस-रंग सन
मणिमय बैठक शोभय।"



"ओतहि बैसि यक्षिणि संध्या मे
दिनक थकान मेटाबथि,
हाथक कंगन बजा, ताल दै
मोर-मयूर नचाबथि।" (८५)



"तन्मध्ये च स्फटिकफलका काञ्चनी वासयष्टि-
र्मूले बद्धा मणिभिरनतिप्रौढवंशप्रकाशैः।
तालैः शिञ्जावलयसुभगैर्नर्तितः कान्तया मे
यामध्यास्ते दिवसविगमे नीलकण्ठः सुहृद्वः॥"

"हे प्रिय, साधु, बतौलहुँ जतबा
से सभ राखब मन मे,
तोरण-द्वार, केलि-पर्वत आ'
पोखरि हौयत ध्याने।"

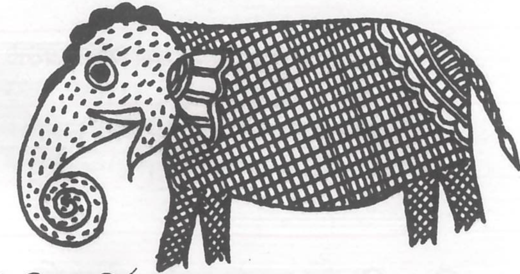
"तेकर अलावे आओर एकटा
चिन्ह घरक बतबइ छी,
नहि हो कनियो चूक, तेहन
किछु आओर कहइ छी।"

"हमर प्रिया चित्रक लिखिया मे
बितपनि, बहुत निपुण छथि,
द्वारिक दूनू कात बनौलनि
शंख-पद्म शुभ रचि-रचि।"

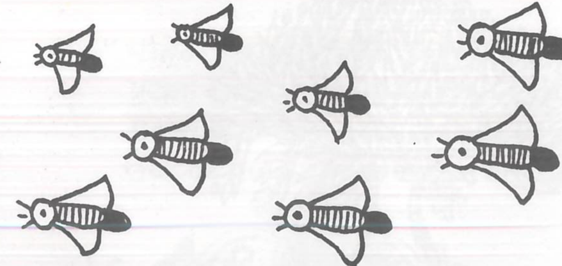
"सभ सँ बड़का चिन्ह, कहू की?
उत्सव-हीन हमर घर,
जेना कमल श्री-हीन रहइ अछि
रवि कें अस्त भेला पर।" (८६)

"एभिः साधो! हृदयनिहितैर्लक्षणैर्लक्षयेथा
द्वारोपान्ते लिखितवपुषौ शंखपद्मौ च दृष्ट्वा।
क्षामच्छायं भवनमधुना मद्वियोगेन नूनं
सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम्॥"

"हे घन, तों इच्छानुरूप छवि
कामरूप तन-धारी,
हाथिक बच्चा, कलभ जेकाँ बनि
जइह', जैं तों कारी।"



"बैसि केलि-पर्वत पर सम्मुख
पहिने सभ ठेकनबिह'
भगजोगनी सन मद्धिम 'बिजुरी
दृष्टि बना घर घुसिह'।" (८७)



"गत्वा सद्यः कलभतनुतां शीघ्रसम्पातहेतोः
क्रीडाशैले प्रथमकथिते रम्यसानौ निषण्णः।
अर्हस्यन्तर्भवनपतितां कर्तुमल्पाल्पभासं
खद्योतालीविलसितनिभां विद्युदुन्मेषदृष्टिम्॥"

"घर मे घुसिते पहिने देखब'
युवती रूप अमोलक,
कृश तन, दाड़िम सन दन्तावलि
ठोर लाल तिलकोरक।"

"चकित मृगी सन नयन सुचंचल
डाँर क्षीण, कुच भारी,
पृथुल नितम्बक भारें बोझिल
मन्द-मन्द पगधारी।"

"नाभि गहींर भमर सन जिनकर
प्रथम नारि विभु-रचना,
ओही भवन मे जइह' प्रियवर
वैह हमर छथि ललना।" (८८)



"तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी
मध्ये क्षामा चकितहरिणीप्रेक्षणा निम्ननाभिः।
श्रोणीभारादलसगमना स्तोकनम्रा स्तनाभ्यां
या तत्र स्याद्युवतिविषये सृष्टिराद्येव धातुः॥"

"चकबा-चकबी दैव-सरापें
राति बिलगि दुःख काटय,
मुदा दिवस मे होय समागम
यैह नियति बुझि जीबय।"

"हमर प्रिया दू देह प्राण एक
एक श्वाँस के माला,
दीर्घ अवधि सँ एसकर जीबथि
दग्ध अहर्निशि काया।"

"हे घन, जे क्यो प्रेम करइ अे
से दू ठाम जीबइ अे,
दोबर सुख तहिना दुःख दोबर
प्रेमिए दुनू जनइ अे।"

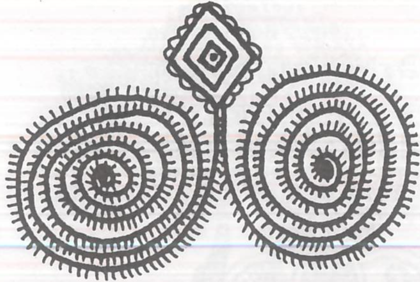
"पहिल बेर ओ हमर अङ्क सँ
पृथक कतहु सूतइ छथि,
गुमसुम तकैत एकान्त कोन मे
उचटल सतत रहइ छथि।"



"हमरा सँ नहि हाल छिपल छनि
हुनकर कोनो दुक्खक,
कनिञे मे मुरझाय लगइ छथि
कनिञा जेना मनुक्खक।"

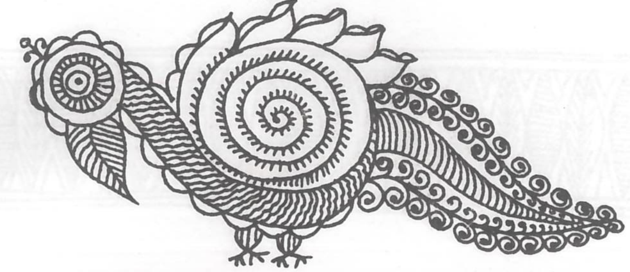
"जेना मानवी नेप चुआबय
कानय- बाजय- रूसय,
सीख- लीख तेहने छनि आदति
इच्छा कौनो ने टूटय।"

"आइ बनल श्री-हीन पद्मिनी
जेना शिशिर मे पंकज,
जीवित छी, वाछी गत- जीवन
मन मे ई असमञ्जस।" (८१)



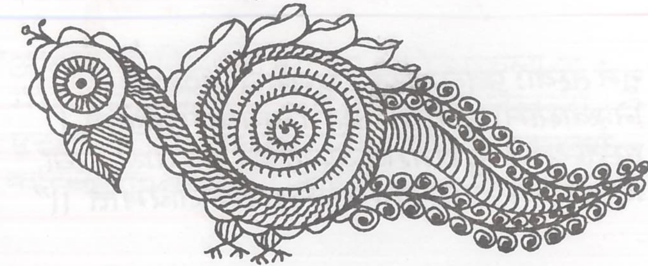
"तां जानीथाः परिमितकथां जीवितं मे द्वितीयं
दूरीभूते मयि सहचरे चक्रवाकीमिवैकाम्।
गाढ़ोत्कण्ठां गुरुषु दिवसेष्वेषु गच्छत्सु बालां
जातां मन्ये शिशिरमथितां पद्मिनीं वान्यरूपाम्॥"

"आँखिक नोर सुखै नहि कखनो
खन सिसकी, खन हिचकी,
ठोहि पारि कानइ छथि कखनो
कखनो आबनि छुटकी।"

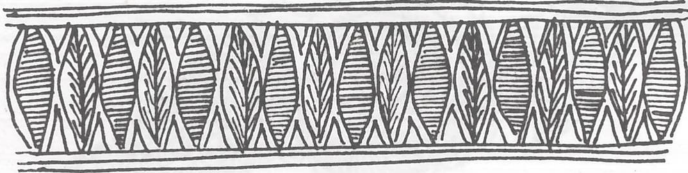


"एतेक पैघ प्रासाद विलासक
तइ मे भम्ह पड़इ अछि,
एसकर धनि आहुरिया काटय
हमरे मोन जनइ अछि।"

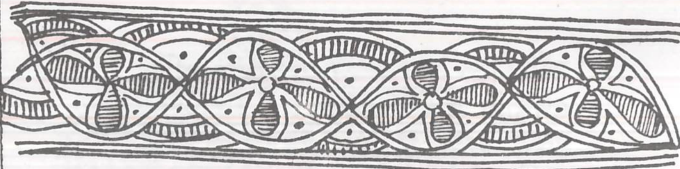
"आँखिक दूनू प'ल फुलल छनि
छोड़थि गर्म उसाँसे,
उष्ण भाफ सँ ठोर सुखायल
नहि किछु रस-आभासे।"



"तरहत्थी पर राखि गाल कें
किदन-किदन सोचइ छथि,
सुधि नहि रहनि जेना कनिञो किछु
नूओं नहि बदलइ छथि ।"



" जट्टा भेल माथ छिट्टा सन
नहि फुलेल मलइ छथि,
जेना चान बादर मे झँपल
तेहने मलिन लगइ छथि ।" (८०)



"नूनं तस्याः प्रबलरुदितोच्छूननेत्रं प्रियाया
निःश्वासानामशिशिरतया भिन्नवर्णाधरोष्ठम् ।
हस्तन्यस्तं मुखमसकलव्यक्ति लम्बालकत्वा
दिन्दोर्दैन्यं त्वदनुशरणक्लिष्ठकान्तेर्बिभर्त्ति ।।"

" हे घन, जखन-जखन सुधि आबैन
मन मे होस करइ छथि,
हमरे कुशल-क्षेम नैमित्तिक
पूजा-पाठ करइ छथि ।"

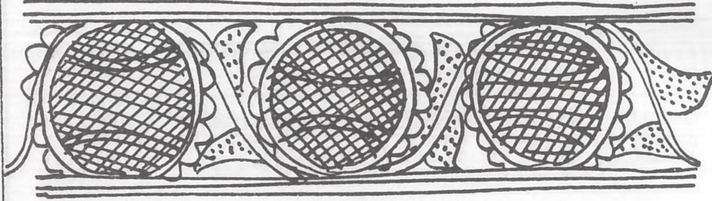
"फेर तखन स्मृति घेरइ छनि
तन छूबी, मन होइ छनि,
मसि-पिहुआ लै चित्र बनाबथि
मुदा ने बैनि पाबइ छनि ।"

" केहन हेता भ' गेल एखन प्रिय?
दुब्बर ! कत्ते दुब्बर ?
आह! एहन गति ? कोना बनायब,
एहन विकट सन दुग्गर !"

"द्वारि-दारि पोसुआ मैना लग
बैसि करथि किछु फदका,
"की गे मैना, स्वामिक दुलरी,
कह उच्चारि किछु नबका"!" (८१)

"आलोके ते निपतति पुरा सा बलिव्याकुला वा
मत्सादृश्यं विरहतनु वा भावगम्यं लिखन्ती ।
पृच्छन्ती वा मधुरवचनां सारिकां पञ्जरस्थां
कच्चिद्भर्तुः स्मरसि ? रसिके ! त्वं हि तस्य प्रियेति ।।"

"हे घन, सुनि मैना के बोली
अपनहुँ स्वर हिलकोरैनि,
कोरा मे वीणा ल' बैसथि
हमर सोहागिनि यक्षिणि।"

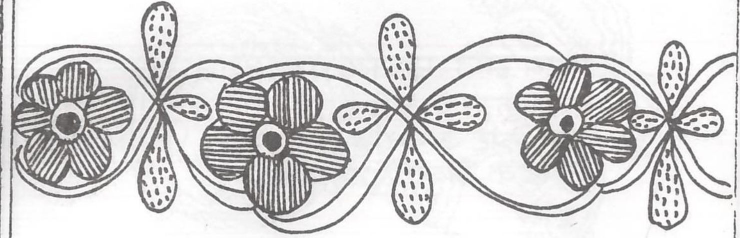


"मइल-भोल साड़ी एक-पढ़िया
तेहने सूती आड़ी,
हमर नाम धै गीत उठाबेथि
सुर भ' जाय बेढड़ी।"

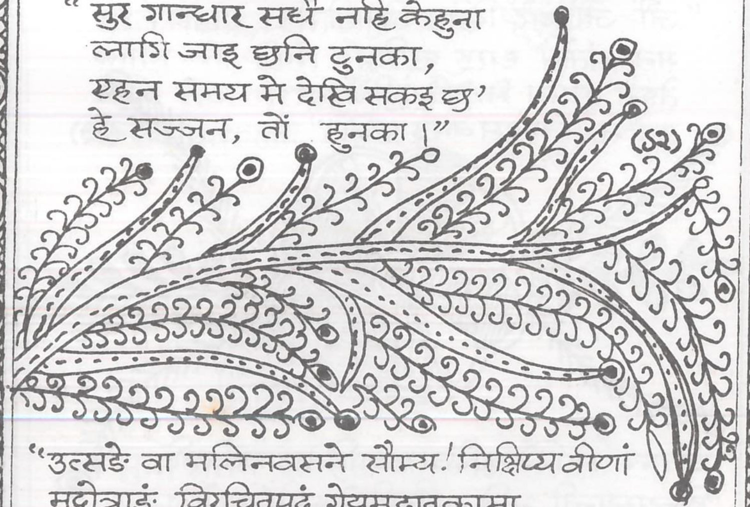
"जाऽऽही बाऽऽटे हऽरी" गेऽऽल...
दूऽभियो" ज..नमि गेऽऽल...
कि आऽऽहो राऽऽमा'''
कौने रे जोगीनित्रा " जोगबा'मा'रल रे कि...."



"स्वर आरोहन-अवरोहन क्रम
मूर्च्छन साधि ने पाबथि,
आँखिक नोर खसै वीणा पर
पोछथि, पुनः भिजाबथि।"



"सुर गान्धार सधै नहि केहुना
लागि जाइ छनि दुनका,
एहन समय मे देखि सकइ छ'
हे सज्जन, तों हुनका।"



"उत्सङ्गे वा मलिनवसने सौम्य! निक्षिप्य वीणां
मद्गोत्राङ्कं विरचितपदं गेयमुद्गातुकामा,
तन्त्रीमार्द्रां नयनसलिलैः सारयित्वा कथंचिद्
भूयो भूयः स्वयमपि कृतां मूर्च्छनां विस्मरन्ती॥"

"हे प्रिय घन, जहिया हम चललहुँ
अलका सौं बनि विरही,
वर्ष दिनक गिनतीक' रखलनि
फूल बीछि क' देहरी।"

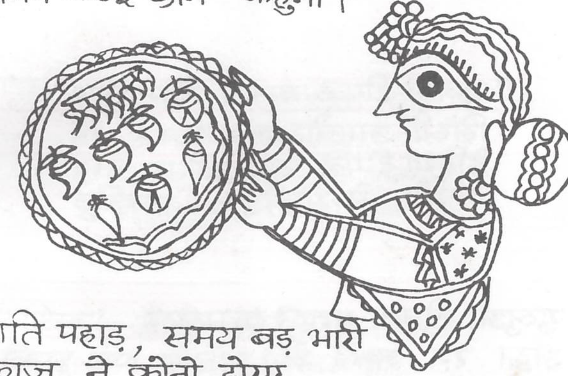
"नित्य राति फूलक ढेरी सौं
एगो फूल फेकइ छथि,
हाथ फेरि अपनहि तन सगरो
माटिक सेज सुतइ छथि।"

"जौं-जौं घटै दिवस गिनती मे
मन संतोष धरइ छथि,
तेहन समय मे देखिह' जेखन
आत्म-विलास करइ छथि।" (५३)

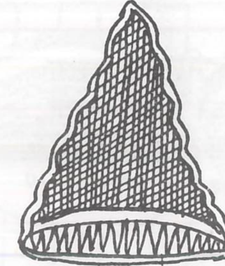


"शेषान्मासान्विरहदिवसस्थापितस्यावधेर्वा
विन्यस्यन्ती भुवि गणनया देहलीदत्तपुष्पैः।
मत्सङ्गं वा हृदयनिहितारम्भमास्वादयन्ती
प्रायेणैते रमणविरहेष्वङ्गनानां विनोदाः॥"

"दिन मे पूजा, चित्रक लिखया
खन मैना, खन वीणा,
आओर काज किछु एम्हर-ओम्हर
समय कटइ छनि केहुना।"



"राति पहाड़, समय बड़ भारी
काज ने कौनो दोसर,
बैसि सेज पर सोचथि केवल
केकरा कहती सोखर।"



"सुन्न पाबि सन्हिआय कोंढ़ मे
दारुण विरह-बतीसी,
उखड़य श्वाँस, पॅल नहि पाबय
लागल जनि उड़बिस्सी।"

"महलक शयन-कक्ष मे खिड़की
बनल काष्ठ के कल्पक,
रत्नखचित पर्यङ्क सुसज्जित
काढ़ल शिल्प अमोलक।"

"सुजनी टीपक बनल किनारी
सिंधी आओर कसूती,
डेढ़िया टीपक पत्ता-पुत्ती
जंजीरा मे मोती।"

"गुलुआ टीपक बनल कमलदह
अद्भुत रंग जमइ अै,
ठाँओ देल पर चकमक अरिपन
आँगन-मध्य लगइ अै।"

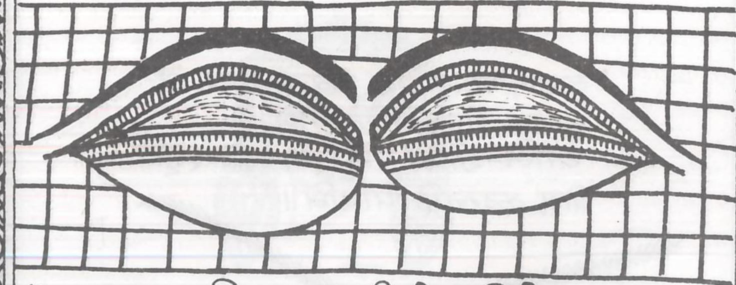
"मुदा तोहर भौजी पतिबरता
त्यागि सकल सुख-चर्या,
अखरा पटिया ताड़-खजूरक
नहि जाजिम आ तकिया।"



"कखनहुँ बाँहि माथ तर राखथि
कखनो घी चौकठि पर,
टक-टक नयन शून्य मे ताकय
जे'ना कोनो रतिचर।"

"एहन विकट आधिक तरास मे
तों अमरित बनि जइह',
हमर समाद सुना कै हुनका
'दुखिया-जान बचबिह'।"

"देखिह', जँ हो आँखि मुनायल
किछु क्षण ओतहि बिलमिह',
सझमझ, चुपचाप, चकरका
खिड़की पर तों बैसिह'।" (५४)



"सव्यापारामहनि न तथा पीडयेन्मद्वियोगः
शङ्के रात्रौ गुरुतरशुचं निर्विनोदां सखीं ते।
मत्सन्देशैः सुखयितुमलं पश्य साध्वीं निशीथे
तामुन्निद्रामवनिशयनां सौधवातायनस्थः॥"

"हे मीता, ओ हमर पुनीता
मन-सन्तापें दुब्बरि,
विरह-सेज पर एकहि करोटें
सूखि गेली रस-कुम्मरि।"

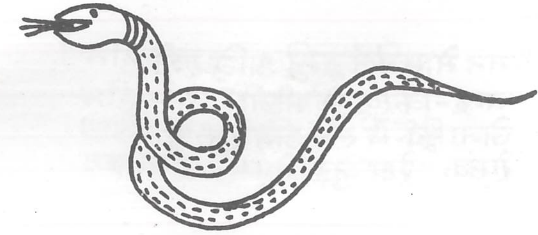
"टाङ मोड़ि सूतल उकडू भेल
बाकुट सेज पकड़ने,
झक्ख मारि ताकथि पूरब दिशि
चानक रेह पकड़ने।"

"सोलह कला कहल अछि शशि कें
तखन होथि छविमन्ता,
अमस अन्हरिया एकहि कला तैं
क्यो नहि करय सेहन्ता।"

"कटल चान सन खिन्न वदन लै
मनक शोक फटकारथि,
चालि-ओसा पहिलुक सुख-स्मृति
शेष कदन्नहि पाबथि।"



"रास-रंग मे डूबल पहिलुक
निशि बीतइ छल क्षण मे,
वैह राति काटब छनि मोसकिल
घोर कैतक फण मे।"



"कैलासक शीतल समीर आ'
शशिक सुधा मे भीजल,
राति कहाँदन भेल निपत्ता
आब नोर अछि धीपल।" (८५)



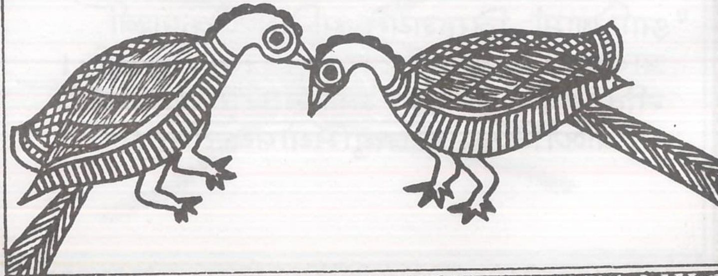
"आधिक्षामां विरहशयने सन्निषण्णैकपार्श्वां
प्राचीमूले तनुमिवं कलामात्रशेषां हिमांशोः।
नीता रात्रिः क्षण इव मया सार्धमिच्छारतैर्या
तामेवोष्णैर्विरहमहतीमश्रुभिर्यापयन्तीम्॥"

"जगह - जगह जाली - गवाक्ष सौं
आबि किरण पसरइ अछि,
जीबि जायत सभ विस्मृत स्मृति
एतबहि सोच डॅसइ अछि।"

"मन मे मचल द्वन्द्व अछि एगो
चन्द्र-किरण मे भीजी ?
जेना पूर्व मे एहि अमरित सँ
रोमक रेघ जुड़ाबी!"

"तखने पहिलुक दृश्य हृदय मे
नहुऍ- नहुऍ पसरय,
भोगल क्षण आकार धरै आ'
कनिऍ मन कें भावय।"

"उठय दृष्टि शशि-शुभ्र ज्योति दिशि
चोटहि पुनि घुरि आवय,
ठमकल नोर झाँपि पिपनी मे
प्रेमक जिद दोहराबय।"



"कामक दशा छठम सीढ़ी पर
द्वन्द्व हृदय मे भारी,
जाहि विषय कें भोगल पहिने
तेकरे करय किनारी।"

"नहि देखब ई राति इजोरिया
नहि पीयब ई अमरित,
जखन रहब पुनि दूनू बेगती
तखनहि होयब तिरपित।"

"द्वन्द्वक ई आभास विरह मे
विषयद्वेष कहबइ अछि,
जे वरेण्य छल सुखमय क्षण मे
तेकर निषेध करइ अछि।"

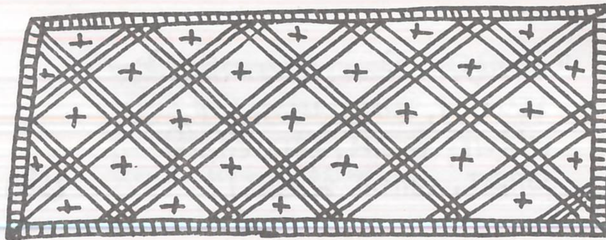
"मेघाच्छन्न दिवस मे कमलिनि
सुटकल, आधा फलकल,
तहिना, हे घन, हमर संगिनी
जाग्रत, आधा भासल।" (५६)

"पादानिन्दोरमृतशिशिराञ्जालमार्गप्रविष्टान्
पूर्वप्रीत्या गतमभिमुखं संनिवृत्तं तथैव।
चक्षुः खेदात्सलिलगुरुभिः पक्ष्मभिश्छादयन्ती
साभ्रेऽह्नीव स्थलकमलिनीं न प्रबुद्धां न सुप्ताम्॥"

"नहि सुगंधि, उबटन, रसायन किछु
स्नान मात्र जल टा सौं,
भखरल केस तेल बिनु लटकय
आनन पर झोंटा सौं।"

"तबधल श्वाँसक फेंक अधरके
कोमलता कें जारय,
मुदा मूँह पर लटकल लट कें
एमहर-ओमहर टारय।"

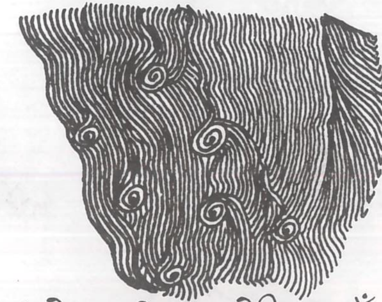
"पड़ल सेज पर छटपट विरहिनि
नीन आँखि नहि आबय,
स्वप्नक आस बचल मन मे जे
पल-छिन मिलन कराबय।" (८७)



"निःश्वासेनाधरकिसलयक्लेशिना विक्षिपन्तीं
शुद्धस्नानात्परुषमलकं नूनमागण्डलम्बम्।
मत्संभोगः कथमुपनयेत्स्वप्नजोऽपीति निद्रा-
माकाङ्क्षन्तीं नयनसलिलोत्पीडरुद्धावकाशाम्॥"

"विरह-दण्ड राजाज्ञा पौलहुँ
जाहि दिवस तहियेसँ,
त्यागल सुमुखि सिङार-सौख्य सभ
स्वतः आत्म-निर्णय सँ।"

"नोचल केस गुथल तिनजुटिया
फोड़ल तेलक सखा,
पुष्पक माल नेरौलनि तखनहि
फेकल एना-ककबा।"



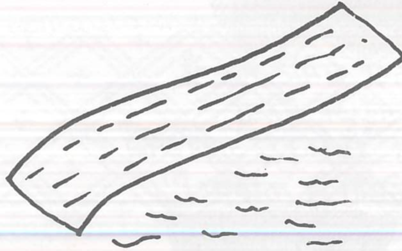
"पोसल केस समेटि एक ठाँ
बान्हि एलहुँ जे तहिया,
आठ मास सँ रुक्ख जटा बनि
अकड़ल होयत ने कहिया।"



"न'ह बाढ़ि खुरपा सन होयत
आङुर बनल अबाहे,
जखन कोनो लट मुँह पर औतनि
नोछरत गाल कटाहे।"



"हे प्रिय घन, जहिया पुनि छूटब
शापक एहि बंधन सौं,
भाड़ब, थकड़ब, धोय पखारब
कस्तूरी - चंदन सौं।" (६८)



"आद्ये बद्धा विरहदिवसे या शिखा दामहित्वा
शापस्यान्ते विगलितशुचा तां मयोद्वेष्टनीयाम्।
स्पर्शक्लिष्टामयमितनखेनासकृत्सारयन्तीं
गण्डाभोगात्कठिनविषमामेकवेणीं करेण॥"



"जे दयालु छथि, पर-उपकारी
मन करुणा सँ तीतल,
हे घन, अनकर दुःख सँ तिनकर
रोआँ-रोआँ भीजल।"

"नव-पुरैनि तातल बालू पर
तहिना मित्तिन तोहर,
कोमल तन छटपट पटिया पर
हुकरैथि भेल निठोहर।"

"खन करोट सूतथि, खन बइसैथि
खन उतान, घसमोड़िया,
कानि-कानि भरब', हे पावन
हुनकर देखि अहुड़िया।"

(६८)



"सा संन्यस्ताभरणमबला पेशलं धारयन्ती
शय्योत्सङे निहितमसकृद् दुःखदुःखेन गात्रम्।
त्वामप्यस्रं नवजलमयं मोचयिष्यत्यवश्यं
प्रायः सर्वो भवति करुणावृत्तिरान्द्रान्तरात्मा॥"

ई नहि बुझिह' जमा रहल छी
अगबे गप्प हँकइ छी,
एहन प्रीति पाबय बड़भागी
घुच्छ बड़ाइ ढकइ छी।"

"सभ दिन सँ ओ छथिये तेहने
हुनकर चालि जनइ छी,
हमरा बिनु किछु नीक ने लागैनि
तैं ई अनुमानइ छी।"

"नहि गहना, नहि चाटी-पाटी
नहि पटोर, मुँहपोछना,
विरह-काल मे दुःख अवधारल
दुःखहि पहिरना-ओढ़ना।" (१००)



"जाने सख्यास्तव मपि मनः संभृतस्नेहमस्मा-
दित्थंभूतां प्रथमविरहे तामहं तर्कयामि।
वाचालं मां न खलु सुभगंमन्यभावः करोति
प्रत्यक्षन्ते निखिलमाचिराद्भ्रातरुक्तं मयायत्॥"

"जट्टा भेल केस, लट लटकल
बेढ़ल नयन-चपलता,
बिनु काजर उस्सठ फाँड़ा सन
शुष्क निरार वियुक्ता।"

"आसव धरि नहि पान करइ छथि
भौंह बिसारल कौतुक,
अचकहि देखि तोरा आगाँ मे
सुरफुरायत भै उत्सुक।"

"सुगबुगाय फुजि उठत बाम दृग
कँापत अलसित पपनी,
माछक ढाही सौं जौं काँपय
जल मे ठाढ़ कमलिनी।" (१०१)



"रुद्धापाङ्गप्रसरमलकैरंजनस्नेहशून्यं
प्रत्यादेशादपि च मधुनो विस्मृतभ्रूविलासम्।
त्वय्यासन्ने नयनमुपरिस्पन्दि शङ्के मृगाक्ष्या
मीनक्षोभाच्चलकुवलयश्रीतुलामेष्यतीति॥"

"बात गुप्त अछि, मुदा मित्र बुझि
तोरे इहो कहइ छी,
जौं ओ पुछैथि, की चिन्हाइन अछि
तही हेतु बतबइ छी।"

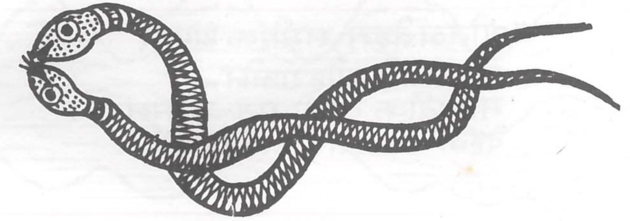
"जखन-जखन हम दूनू प्रेमी
मैथुन-खेल करइ छी,
वसनहीन, बहुविधि आलिंगन
चुम्बन-मथन करइ छी।"

"रत-रत गोर, कदलि-थम्ह सन
जाँघ बिना नखछत अछि,
देखि समदिआ सम्मुख फड़कत
मन मे अनुभव होइ अछि।" (१०२)



"वामाश्चास्याः कररुहपदैर्मुच्यमानो मदीयै-
र्मुक्ताजालं चिरपरिचितं त्याजितो दैवगत्या।
संभोगान्ते मम समुचितो हस्तसंवाहनानां
यास्यत्यूरुः सरसकदलीस्तम्भगौरश्चलत्वम् ॥"

"जँ ओ सरिपहुँ नीन पड़ल हो
बुझिह' स्वप्नँ देखइ छथि,
गाढ़ालिंगन, ठोर ठोर पर
स्मृति पीबि रहल छथि।"



"तेहना सन मे पहर काल धरि
तों ढनढन्नी रोकिह',
देखिह', नीन टुटय नहि किन्नहु
गलबाँही नहि तोड़िह'।" (१०३)



"तस्मिन्काले जलद यदि सा लब्धनिद्रासुखा स्या-
दन्वास्यैनां स्तनित विमुखो याममात्रं सहस्व।
मा भूदस्याः प्रणयिनि मयि स्वप्नलब्धे कथंचि-
त्सद्यः कण्ठच्युतभुजलताग्रन्थि गाढ़ोपगूढ़म् ॥"

"जखन जगाबक हो, हे प्रिय घन
एगो काज अवश्ये करिह',
मेही-मेही जलक बुन्न कें
घोरि वायु मे शीतल करिह'।"

"शीतल तेहन समीरक थपकी
तन सगरो सोहराओत,
मालतीक कौँढ़ी सन कोमल
देहक अलस मेटाओत।"

"तों तखने खिड़की चढ़ि बइस'
बिजुरी भितरे राखिह',
सम्मुख ठाढ़, मोन दृढ़ कैने
असल समदिआ लागिह'।"

"ओ सोझाँ तोर दिशि तकथुन
थीर-नजरि अनुगामिनि,
तों गर्जन-भाखा मे बाजिह'
मन्दहि-मन्दहि, "मानिनि"!" (१०४)

"तामुत्थाय स्वजलकणिकाशीतलेनानिलेन
प्रत्याश्वस्तां सममभिनावैर्जालकैर्मालतीनाम्।
विद्युद्गर्भः स्तिमितनयनां त्वत्सनाथे गवाक्षे
वक्तुं धीरः स्तनितवचनैर्मानिनीं प्रक्रमेथाः॥"

"हे सुभगे, सुहबे, बहुआसिनि
हम छी मेघ, समदिआ,
दूत बना सभ बात बतौलनि
मीत, अहींक सिनेहिआ।"



"हमरे देखि कृषक बोनिहारो
खेतक आरि धरइ छथि,
जिनकर पति परदेस विराजय
वनिता लट झाड़इ छथि।" (१०५)



"भर्त्तुर्मित्रं प्रियमविधवे विद्धि माम्बुवाहं
तत्संदेशैर्हृदयनिहितैरागतं त्वत्समीपम्।
यो वृन्दानि त्वरयति पथि श्राम्यतां प्रोषितानां
मन्द्रस्निग्धैर्ध्वनिभिरबलावेणिमोक्षोत्सुकानि॥"

"पवनतनय लंका मे जा क'
मैथिलि- सेवा कैलनि,
राम- वचन सम्वाद सुना क'
हरणक क्लेश मेटौलनि ।"

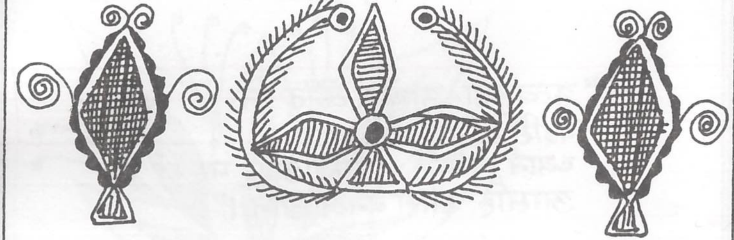
"जेना जानकी आदरपूर्वक
हनुमत कें बड़सौलनि,
शील-स्वभाव चरित्र-शौर्य कें
बहुत प्रशंसा कैलनि ।"

"तहिना जानि प्रियक सन्देशक
तोरा मोद सँ सुनथुन,
मिलन- समागम सँ कनिञे कम
एहि समाद कें बुझथुन ।" (१०६)

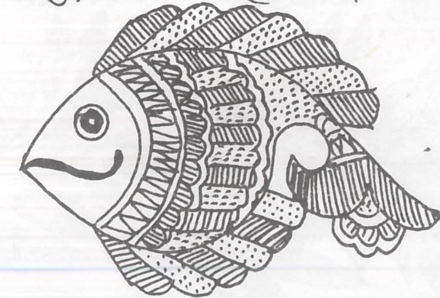


"इत्याख्याते पवनतनयं मैथिलीवोन्मुखी सा
त्वामुत्कण्ठोच्छ्वसितहृदया वीक्ष्य संभाव्य चैवम् ।
श्रोष्यत्यस्मात्परमवहिता सौम्य सीमन्तिनीनां
कान्तोदन्तः सुहृदुपनतः संगमात्किंचिदूनः ॥"

"हे आयुष्मन्, हम कृतज्ञ छी
एहि उपकारक मादे,
हमर प्रिया के कहबनि समटा
जहिना कहल समादे ।"



"कहबनि, "" हे अबले ! छथि नीके
प्रियतम यक्ष अहाँके,
रामगिरिक आश्रम मे छथि ओ
बिछुड़ल प्रेम अहाँके "" ।" (१०७)

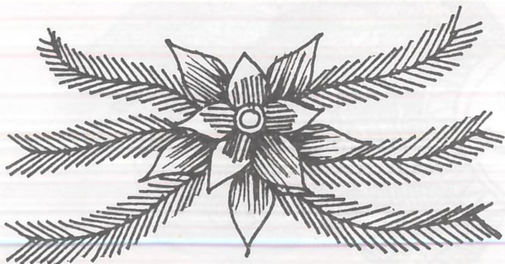


"तामायुष्मन्मम च वचनादात्मनश्चोपकर्तुं
ब्रूयादेवं तव सहचरो रामगिर्याश्रमस्थः ।
अव्यापन्नः कुशलमबले पृच्छति त्वां वियुक्तः
पूर्वाभाष्यं सुलभविपदां प्राणिनामेतदेव ॥"

"हे सुन्दरि, ओ बड़ा बेकल छथि
काँट-काँट सहड़ी सन,
ओड़हा भेल विरह-ज्वाला सँ
आँखि नोरायल दही सन ।"

"उत्कण्ठा-आवेग कौँढ़ मे
पइसि करेज मथइ छनि,
ध्यान लगौने सुमुखि अहीं पर
आसहि साँस बनल छनि ।"

"दैव-विरोधें बाट बेदल छनि
ततबे दूर रहइ छथि,
तही कारणे हमरा मुँह सँ
अपने बात बजइ छथि ।"   (१०८)



"अङ्गेनाङ्गं प्रतनु तनुना गाढतप्तेन तप्तं
सास्रेणाश्रुद्रुतमविरतोत्कण्ठमुत्कण्ठितेन ।
उष्णोच्छ्वासं समधिकतरोच्छ्वासिना दूरवर्ती
सङ्कल्पैस्तैर्विशाति विधिना वैरिणा रुद्धमार्गः ॥"

"सखिक झुण्ड मे आँखि बचा क'
बात दुटप्पी फुसियो
कनफुसकी के लाथ लगा क'
चूमथि गाल अनेरो ।"

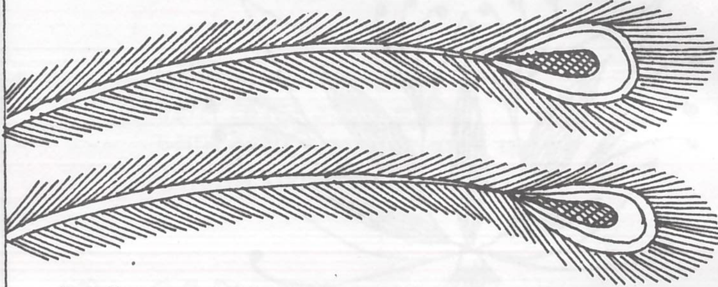


"श्रव्य-दृश्य सीमा सँ बाहर
आइ अवश ओ जैं छथि,
हमरा शब्दें अपन भावना
तैं अभिव्यक्त करइ छथि ।"   (१०९)

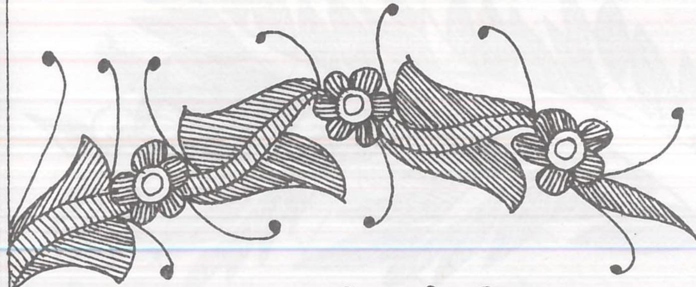


"शब्दाख्येयं यदपि किल ते यः सखीनां पुरस्ता-
त्कर्णे लोलः कथयितुमभूदाननस्पर्शलोभात् ।
सो'तिक्रान्तः श्रवणविषयं लोचनाभ्यामदृष्ट्य-
सत्वामुत्कण्ठाविरचितपदं मन्मुखेनेदमाह ॥"

"श्यामलता सन देहयष्टि आ'
नयन डरल हरिनी सन,
शशि सन आनन, केस मयूरक
पाँखि मनोरम अनमन ।"



"सरित-ऊर्मि सन कतरल-बंकिम
भौंहक अर्थ करइ छी,
तोहर सरिस तोंही एक भामिनि
मन मे तर्क करइ छी ।" (११०)

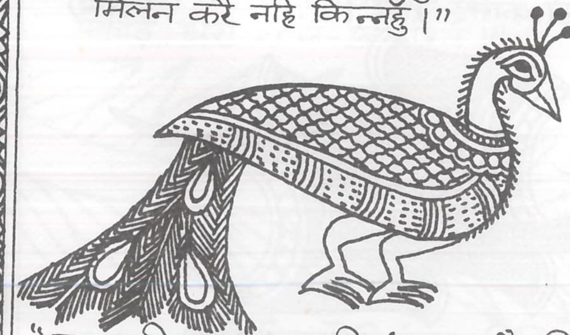


"श्यामास्वङ्गं चकितहरिणी प्रेक्षणे दृष्टिपातं
वक्त्रच्छायां शशिनि शिखिनां बर्हभारेषु केशान् ।
उत्पश्यामि प्रतनुषु नदीवीचिषु भ्रूविलासान्हन्तै-
कस्मिन्क्वचिदपि न ते चण्डिसादृश्यमस्ति ॥"

"हमर बिछोहें रूसल होयब
से बुझि चित्र गढ़इ छी,
चरण-कमल पर माथ राखि क'
मना लेब, सोचइ छी ।"

"गेरु माटि सँ शिलापटल पर
जँ-जँ चित्र बनइ अछि,
आँखिक नोर चुबय लिखिया पर
बनल चित्र मेटबइ अछि ।"

"वैरी दैवक कोप अतत्तः
मन सन्तोष ने भिन्नहुँ,
बहुविधि उकठ करै जे एहुना
मिलन करै नहि किन्नहुँ ।" (१११)



"त्वामालिख्य प्रणयकुपितां धातुरागैः शिलाया-
मात्मानं ते चरणपतितं यावदिच्छामि कर्तुम् ।
अस्त्रैस्तावन्मुहुरुपचितैर्दृष्टिरालुप्यते मे
क्रूरस्तस्मिन्नपि न सहते संगमं नौ कृतान्तः ॥"

"हे मानिनि, सपना मे जैखन
दर्शन अहँक करइ छी,
आलिंगन मे बान्हि राखिली
शून्य मे बाँहि फेकइ छी।"

"शून्य केना क्यो बान्हि सकइ अै?
नभ कें चूमि सकइ अै?
अलख वायु मे देह प्रिया के
की, क्यो नापि सकइ अै?"

"ई सभ हाल देखि वनदेवी
मर्मक चोट सहइ छथि,
नोरक मोती खसबैथि तरुपर
दशा देखि कानइ छथि।" (११२)

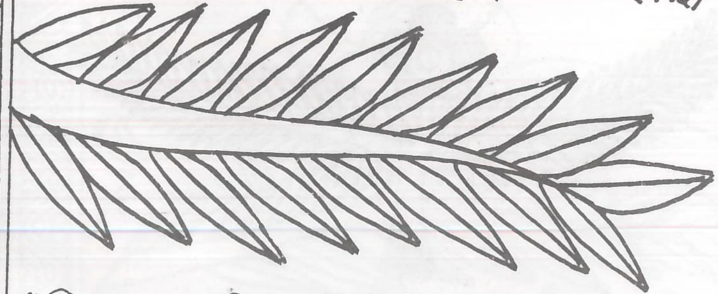


"मामाकाशप्रणिहितभुजं निर्दयाश्लेषहेतो-
र्लब्धायास्ते कथमपि मया स्वप्नसंदर्शनेषु।
पश्यन्तीनां न खलु बहुशो न स्थलीदेवतानां
मुक्तास्थूलास्तरुकिसलयेष्वश्रुलेशाः पतन्ति॥"

"देवदारु मे नव-नव टुस्सा
गोंदक भरल कनोजीरे,
तेकरा छूबि बहय हेमानिल
दक्षिण-पथ सँ ऊपरि।"



"हे गुण-आगरि, अहिंक देह कें
छूबि अनिल अछि सुरभित,
से बुझि जी चाहय बाकुट मे
पकड़ि धरी छवि-अमरित।" (११३)



"भित्वा सद्यः किसलयपुटान्देवदारुद्रुमाणां
ये तत्क्षीरस्रुतिसुरभयो दक्षिणेन प्रवृत्ताः।
आलिङ्ग्यन्ते गुणवति मया ते तुषाराद्रिवाताः
पूर्वं स्पृष्टं यदि किल भवेदङ्गमेभिस्तवेति॥"

"तीन पहर के राति केनहुना
होअय किछुक विपलकें,
दिवस वियोगक ताप अडे़ जब
जौं मद्धिम, हे अबले !"



"तेहने सन किछु बात सोचइ छथि
लगै जेना भासिआयल,
अशरण भेल अनाथ विरह मे
मन-अङोर, मरिआयल।" (११४)



"संक्षिप्येत क्षणइव कथं दीर्घयामा त्रियामा
सर्वावस्थास्वहरपि कथं मन्दमन्दातपं स्यात्।
इत्थं चेतश्चटुलनयने दुर्लभप्रार्थनं मे
गाढ़ोष्माभिः कृतमशरणं त्वद्वियोगव्यथाभिः ॥"

"हे कल्याणी, धैर्य ने छोड़ू
शापक होयत समापन,
की-की करब तखन, से मन मे
सोचैत लगै कौनादन।"

"जे निश्चित अछि, से भोगक अछि
केतबो विकट झमेला,
जँ ई संकट सँ जी बाँचत
होयत लोचन-मेला।"

"सुख-दुःख दूनू संग चलइ अछि
खन आगाँ, खन पाछाँ,
जेना चक्र मे नेमि घुमइ अछि
खन पछाति, खन सोझाँ।" (११५)



"नन्वात्मानं बहु विगणयन्नात्मनैवावलम्बे
तत्कल्याणि त्वमपि नितरां मा गमः कातरत्वम्।
कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण ॥"

"हे प्रिये, जहिया विष्णु जगइ छथि
क्षीर-शयन सँ तहिए,
कार्त्तिक धवल एकादशि शुभ दिन
शापक मोचन ओहिए।"

"देवोत्थान एकादशि ओ दिन
चारि मास बाँचल अछि,
होयत संग, पुनः सभ पायब
मन मे जे सोचल अछि।"

"शरदक ऋतु मे परिणत पावस
आओर मनोज्ञ सुभग भै,
बाढ़त प्रीति परम सुख-दायक
सुरति सुभोग सुलभ कै।" (११६)



"शापान्तो मे भुजगशयनादुत्थिते शार्ङ्गपाणौ
शेषान्मासान्गमय चतुरो लोचने मीलयित्वा।
पश्चादावां विरहगुणितं तं तमात्माभिलाषं
निर्वेक्ष्यावः परिणतशरच्चन्द्रिकासु क्षपासु॥"

"हे सखि, आओर कहइ छथि आगाँ
प्रियतम यक्ष अहाँके,
बात एकटा निविड़ गूढ़ अछि
मोनहि होयत कथा से।"

"एक राति, निशीथ, नीन-निभेर
छलहुँ सूतल पहु संगे,
बान्हि ग्रिवा भुजबंध, सटल
तखनहि ई रसभंगे।"

"उठलहुँ अहाँ चेहाय, कनेत
पुक्की दै बिसनाइते,
पूछल पहु की भेल, तखन पुनि
बजलहुँ हँसिते-हँसिते।"

"दुर... जो... नहि किछु... किदन-कहाँदन
देखल दृश्य अनरो,
धोंछिया एक सवार अहाँ पर
रति-रण ठनल घनेरो।" (११७)

"भूयश्चाह त्वमपि शयने कण्ठलग्ना पुरा मे
निद्रां गत्वा किमपि रुदती सस्वनं विप्रबुद्धा।
सान्तर्हासं कथितमसकृत्पृच्छतश्च त्वया मे
दृष्टः स्वप्ने कितव रमयन्कामपि त्वं मयेति॥"

"ई सभ स्मृति-लक्षण सुनि क'
हमर कुशल कें जानब,
हे चंचलनयने, लोकोक्तिक
बात ने मन मे धारब ।"

"जे बाजय, 'जीवित नहि बाँचल'
तिनकहुँ भरम मेटैबनि,
जे बूझय, 'अनकाँ पर मोहित'
तिनकहुँ लाज लगैबनि ।"

"क्यो बूझय, विरहाग्नि प्रेम कें,
कौनो कारणे, मारय,
मुदा सत्य अछि, भोग-अभावें
नित्य प्रेम-रस बाढ़य ।" (११८)



"एतस्मान्मां कुशलिनमभिज्ञानदानाद्विदित्वा
मा कौलीनच्चकितनयने मय्यविश्वासिनी भूः ।
स्नेहानाहुः किमपि विरहे ध्वंसिनस्ते त्वभोगा
दिष्टे वस्तुन्युपचितरसाः प्रेमराशीभवन्ति ॥"



"हे प्रिय घन, तोहर सखि प्रथमहि
विरह - व्यथा भोगइ छथि,
जीवन - मृत्युक बीच भमर मे
मरि - मरि क' जीबइ छथि ।"

"बोल - भरोस दिह' हुनका, पुनि
मिलनक दै आश्वासन,
घुरिह' कैलासक पर्वत सौं
शीघ्रहि चढ़ि वातासन ।"

"घुरती काल एते सुधि रखिह'
लाबी कोनो चेन्हासी,
देखा - सुना क' प्राण बचाब'
टारह दीर्घ उदासी ।"

"हमरो जीवन कुन्द-पुष्प सन
भोरहि शिथिल-पझायल,
बिहुँसि उठत सुनि प्रिया - कुशलता
जे विरहें कुम्हलायल ।" (११८)

"आश्वास्यैवं प्रथमविरहोद्रगशोकां सखीं ते
शैलादाशु त्रिनयनवृषोत्खातकूटान्निवृत्तः ।
साभिज्ञानप्रहितकुशलैस्तदवचोभिर्ममापि
प्रातः कुन्दप्रसव शिथिलं जीवितं धारयेथाः ॥"

"मिथिला मे 'ई बड़ प्रसिद्ध अछि
'मौन स्वीकारक लक्षण';
हमहूँ मन मे सैह बुझइ छी
जौं बजल' नहि तत्क्षण ।"

"तों स्वभाव सँ पर-उपकारी
बिनु मङने जल दइ छ',
बिनु बजने चातक के मुँह मे
अमरित-बुन्द भरइ छ' ।"

"जे उदार छथि, याचक-वत्सल
ओ गम्भीर रहइ छथि,
इच्छुक खाली जाय ने कखनो
सबा ध्यान रखइ छथि ।" (१२०)

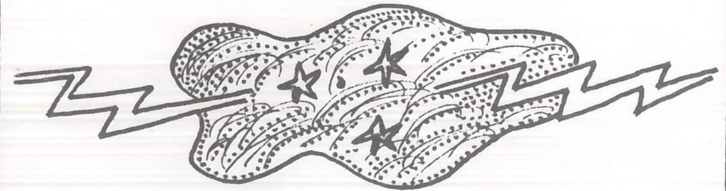


"कच्चित्सौम्य व्यवसितमिदं बन्धुकृत्यं त्वया मे
प्रत्यादेशान्न खलु भवतो धीरतां कल्पयामि ।
निःशब्दोपि प्रदिशसि जलं याचितश्चातकेभ्यः
प्रत्युक्तं हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थक्रियैव ॥"

"हे घन, हमरा मित्र बुझि क'
दुखिया, दूर प्रिया सँ,
अथवा करुणा जेहन तोरा मे
ताही पुण्य-क्रिया सँ ... ..."

हमर काज ई करबे करिह'
जँ अनुचित हो तइयो,
नहि कैने बनत' नहि किन्नहुँ
ऋतु उमरल हो तइयो ।"

"काज हमर सम्पादन कैने
मीत, मुक्त भ' घुमिह',
शुभ-शुभ संग, सखी दामिनि सँ
विलग ने कखनो होइह' ।" (१२१)



"एतत्कृत्वा प्रियमनुचितप्रार्थनावर्त्तिनो मे
सौहार्द्वाद्वा विधुरइति वा मय्यनुक्रोशबुद्धया ।
इष्टान्देशान्जलद विचर प्रावृषा संभृतश्रीर्मा
भूदेवं क्षणमपि च ते विद्युता विप्रयोगः ॥"

इति कालिदासविरचितं मेघदूतम् समाप्तम् ।



रचनाकारद्वयक परिचय



कश्यप: पिता: कवि, उपन्यासकार, स्व. इन्द्र नारायण लाल "सँवलिया"
जन्म: 15 सितम्बर, 1949 ई.
शिक्षा: अपने मने;

पनरह बरखक उमेर मे अनुभव भेल जे विश्वक बहुसंख्यक लोक गरीब छथि, आ' जे गरीब छथि वैह निरक्षर वा अशिक्षित छथि मुदा हुनका लग परम्परागत कौशल आ लोकविद्याक बड़का थत्ती अछि जेकर दोहन कैला सँ एकटा तेहन पद्धति विकसित कैल जा सकैछ, जाहि मे वंचित लोक पढ़िते-पढ़िते कमाओ सकैत छथि। एही चिन्तनक आधार पर, सोलह बरखक वयस मे, जनवरी 1965 मे, नेना सभहक लेल 'नाइट-स्कूल' प्रारम्भ कैल। एही तरहक काज मे लागल-लागल सन् 1981 मे, 'कला-आधारित जीवन आ शिक्षण-पद्धति'क प्रवर्त्तन कैल, जेकर कार्यान्वयणक लेल श्रीमती शिवा कश्यप आ शशिबालाक सहयोग सँ "भारती विकास मंच" संस्था जनवरी 1982 मे स्थापित कैल (निबंधन 15 जून, 1983)। एतय पहिल बेर सभ जाति-धर्मक महिला सभहक लेल 'मिथिला लोकचित्र' आ "गोदना चित्रशैली" मे औपचारिक शिक्षण आ रोजगारमूलक "फैशनतकनॉलॉजी" प्रारम्भ भेल, जेकर प्रसादें आइ मिथिलाक हजारो स्त्री रोजगार-संलग्न छथि। एहि सभ साधनाक मुख्य लक्ष्य "शिल्प-कला-विश्वविद्यालय"क स्थापना अछि, जे नहि एहि जन्म त' अगिला जन्म मे अवश्य पूर्ण होयत।

शशिबाला: पिता: संस्कार-विधि आ पंजी-विशेषज्ञ, लेखक, श्री उग्र ना. लाल;
पति: श्री उमेश कुमार कण्ठ, एम.ए., बी-एल. (बिसहथ);
शिक्षा: 'कला-श्री' (मिथिला चित्रकला मे पी-एच.डी.);

शशिबाला बाल्यावस्थहि सँ 'भारती विकास मंच'क सह-संस्थापिका, प्रथम छात्रा, शिक्षिका आ पहिल लेखिका भेलीह। मिथिलाक अलावा अनेक राज्य आ भारत सँ बाहर इटली/फ्रान्स देश धरि मिथिला-पद्धति क प्रसार मे संलग्न ई साधिका सभ जाति-धर्मक हजारो स्त्रीकें अद्यतन निःशुल्क प्रशिक्षण दै हुनका लोकनिकें रोजगार मे लगौलनि (तइयो, दुर्भाग्य-वश, मिथिला मे स्त्री लोकनिक सामाजिक मूल्य नहि बदलल)। बिहार सरकार आ विश्व-बैंकक साझा खोज मे, सन् 2007 मे, हिनका "मिथिला कलाक नवोन्मेषक" (Innovator) कहल गेलनि। एकबेर 'ऐड्स' विषय पर चित्रक लेल अन्तर्राष्ट्रीय प्रथम पुरस्कार भेटलनि। "साहित्य आ कला दू नञि, एकहि अछि", से सिद्ध करबा मे आकण्ठ तत्पर ई निपुणा एखन धरि जे निस्वार्थ प्रयास कैलनि, से मिथिला मे अद्वितीय अछि।

रचना: (कश्यप/शशिबाला): माछ-भात, मिथिला चित्र-शिक्षा, भाग 1; मिथिला चित्र-कोर, भाग-3; मेघदूत (प्रकाशित); "मिथिला अरिपन" (मैथिली-अंग्रेजी) शीघ्र प्रकाश्य। ॐ



श्लोक प्रकाशन

गाँधी नगर, लक्ष्मीसागर (पो.) दरभंगा-9

E-mail : shlokprakashan@yahoo.co.in

ISBN 978-81-907267-2-6

